thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 13 जुलाई 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 13 जुलाई 2014 से 19 जुलाई 2014

श्रा. कृ. 01 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 116, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. पटियाला में हुआ यज्ञ-प्रशिक्षण का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिन्द्रा रोड़, पटियाला की इकाई 'आर्य युवा समाज' द्वारा पाँच दिवसीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर' लगाया गया। इसका उद्देश्य विद्याथियों को यज्ञ की पद्धति, प्रक्रिया व मन्त्रों के सही व लयबद्ध उच्चारण का ज्ञान देने के लिए शिक्षकवृन्द को प्रशिक्षित करना रहा। शिविर में लगभग 90 शिक्षक–शिक्षिकाओं ने हवन–प्रशिक्षण का संकल्प लिया।

शिविर का शुभारम्भ करते हुए 'वैदिक मन्त्रोच्चारण' के साथ हवन किया गया प्राचार्य एस.आर. प्रभाकर ने मंत्रो के एक–एक शब्द का अर्थ बताते हुए मन्त्रों में की गई प्रार्थना को भी समझाया। उन्होंने प्रतिदिन स्कूल के एक सदन को हवन की पूर्ण व्यवस्था करके स्वयं हवन करने का आग्रह किया।

दूसरे दिन 'महात्मा हसंराज सदन' ने हवन करवाया और प्राचार्य प्रभाकर ने ' ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना' के प्रथम दो मन्त्रों का अर्थ व उसमें छिपे भाव को समझाया।

तीसरे दिन 'स्वामी विवेकानन्द सदन' द्वारा हवन किया गया तथा मन्त्रों के अर्थ समझाने की प्रक्रिया को निरन्तर रखते हुए 3 व 4 मन्त्रों का अर्थ समझाया गया। 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। प्राचार्य प्रभाकर ने कहा, "हमारे पूर्वज व ऋषि–मुनि प्रकृति की पूजा किया करते थे। वे नित्य प्रति हवन किया करते थे, जो हमारे बाह्य वातावरण के साथ–साथ हमारे अन्तःकरण को शुद्ध व स्वच्छ रखने का श्रेष्ठतम उपाय है।" प्राचार्य प्रभाकर के साथ शिक्षकवृन्द ने पेड़–पौधे लगाकर उनकी देशभाल करने, का संकल्प लिया।

चौथे दिन 'गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर' सदन ने बड़ी ही श्रद्धा के साथ हवन करवाया तथा प्राचार्य जी ने 'ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना' के 5 व 6 मन्त्रों के साथ–साथ आर्य समाज' के दस नियमों की व्याख्या की।

'समापन समारोह' का हवन 'स्वामी दयानन्द' सदन द्वारा करवाया गया।प्राचार्य प्रभाकर ने 'ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपसना' के अन्तिम 7 व 8वें मन्त्रों का अर्थ व भाव समझाया। इस अवसर पर अन्तर्सदन 'वैदिक प्रश्नोत्तरी' प्रतियोगिता करवाई गई। प्रत्येक सदन से 4–4 सदस्यों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' सदन के श्रीमती रेनु शर्मा, श्रीमती गीता शर्मा व श्रीमती संगीता गंभीर को उपविजेता घोषित किया गया। शिविर के दौरान स्कूल के स्टाफ ने मिलकर श्रद्धापूर्वक भजन प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय बनाए रखा। स्वामी जी, आर्य समाज व वैदिक धर्म के प्रति आस्था प्रकट करते हुए अकस्मात् ही निकले 'स्वामी दयानन्द जी की जय', 'आर्य समाज–अमर रहे', 'वैदिक धर्म की जय' व 'भारत माता की जय' के जयघोषों से स्कूल परिसर गूँज उठा। गया। प्राचार्य प्रभाकर ने इस शिविर को सफल बनाने में 'आर्य युवा समाज' के सदस्यों एवं स्कूल स्टाफ की सराहना करते हुए उनका धन्यवाद प्रकट किया।

प्राचार्य प्रभाकर, श्री ओमबीर सिंह (प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय–1) व सुप्रसिद्ध रंगाकर्मी व नाटककार श्री प्राण सभ्रवाल ने विजेता टीम, उपविजेता टीम एवं श्रोताओं में से सही उत्तर देने वाले श्रोताओं को 'वैदिक साहित्य' उपहार स्वरूप भेंट किया। इस अवसर पर स्थानीय आर्य समाज के प्रधान श्री राज कुमार सिंगला, विरेन्द्र सिंगला (मन्त्री), श्री जितेन्द्र आर्य (सदस्य), प्रो. के.के. मोदगिल, प्रो. सुशील कुमार, डॉ. रमेश पुरी, आर्य समाज के सदस्य व नगर के सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

'ऋषि लंगर' के साथ शिविर सम्पन्न हुआ।

गुरूकुल पौन्धा देहरादून का तीन दिवसीय 14वाँ वार्षिकोत्सव

गुरूकुल पौन्धा, देहरादून का 3 दिवसीय चौदहवाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम व श्रद्धापूर्वक मनाय गया प्रातः यजुर्वेद पारायण यज्ञ डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई के ब्रह्मत्व में आरम्भ हुआ जिसमें अनेक बृहत यज्ञकुण्डों में यजमानों ने शुद्ध ओषधियुक्त हव्य द्रव्यों व गोघृत से आहुतियाँ दीं। यजुर्वेद के मन्त्रों का पाठ गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने किया जिससे छहों दिशाओं का वातावरण सुगन्धित हो गया। अमेठी से पधारे आर्य जगत के शार्षस्थ वैदिक विद्वान डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री ने प्रवचन किया। उन्होंने ज्ञान, कर्म व भक्ति पर विचारों को प्रस्तुत किया और महर्षि दयानन्द के विचारों से उनकी तुलना की।

आयोजन में भजन हुए व उसके बाद राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ। सम्मेलन को पं. सत्यपाल सरल, प्रो. नवदीप कुमार, डॉ. गजेन्द्र पण्डा, तथा डा. सोमदेव शास्त्री, ने सम्बोधित किया। वीरेन्द्र कुमार राजपूत ने अपनी कविता को गाकर प्रस्तुत किया। वन्दे मातरम का उल्लेख कर प्रो. नवदीप कुमार ने बताया कि इसका उच्चारण कर हमारे सैकड़ों व लाखों क्रान्तिकारियों ने अपने बलिदान दिए हैं।

श्री सत्यपाल सरल ने तीन भजन सुनाए और देश रक्षा के बारे में अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत किए। डा. गजेन्द्र कुमार पण्डा, अहमदाबाद ने कहा कि सभी मनुष्यों को जीवन में तीन प्रकार के व्यक्तियों से मिलना चाहिए पहला जो सात्विक दान करता हो, दूसरा जो अहिंसा का पालन करता हो तथा तीसरा जो ईश्वर का ध्यान रखता हो।

डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित स्वदेशीय राज्य की चर्चा की और उनके भक्त व सहयोगी **"श्यामजी कृष्ण वर्मा"** के क्रान्तिकारी जीवन व कार्य पर सारगर्भित प्रकाश डाला। गुरूकुल के आचार्य डा. धनंजय आर्य ने महर्षि दयानन्द प्रदर्शित संस्कृत

पठन–पाठन की आर्ष शिक्षा पद्धति की चर्चा की और उसे उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने के लिए किए गए सफल प्रयासों पर प्रकाश डाला। आयोजन में अपराह्ण 3:30 बजे से पुनः सायंकालीन यज्ञ सम्पन्न कर अनन्तर भजन व प्रवचन के कार्यक्रम हुए। सामूहिक सन्ध्या भी की गई।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. 1

संपादक – **श्री पूनम सूरी**

thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 13 जुलाइ, 2014 से 19 जुलाई, 2014

जो अन्धे-लंगड़े को तारता है

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

अयं विप्राय दाशुषे, वाजाँ इयर्ति गोमतः।
अयं सप्तभ्य आ वरं वि वो मदे,
प्रान्धं श्रोणं च तारिषद् विवक्षसे।।

ऋग् १०.२५.११

ऋषिः ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद् वा । देवता सोमः । छन्दः आस्तारपंक्तिः ।

● **(अयं)** यह [सोम प्रभु], **(दाशुषे)** विद्यादान करनेवाले, **(विप्राय)** ज्ञानी ब्राह्मण के लिए, **(गोमतः)** गौओं से युक्त, **(वाजान्)** अन्न, धन, बल आदि, **(इयर्ति)** प्रेरित करता है, प्रदान करता है, **(अयं)** यह, **(सप्तभ्यः)** [पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन–बुद्धि इन] सात ऋषियों के लिए, **(वरं)** वर, **(आ[इयर्ति])** प्रदान करता है [और], **(वः)** अपने, **(वि मदे)** विशेष मद में [आकर] **(अन्धं)** अन्धे को, **(श्रोणं च)** और लंगड़े को, **(प्र तारिषत्)** प्रकृष्ट रूप से तार देता है। [हे सोम !] तू, **(विवक्षसे)** महान् है।

● आओ, मित्रो! 'सोम' प्रभु की महिमा सुनो। सोम प्रभु जिसपर प्रसन्न हो जाता है, उसका कल्याण कर देता है। प्रसन्न वह उन्हीं पर होता है जो वर्णाश्रम–मर्यादा के अनुसार अपने कर्तव्य–पालन में संलग्न रहते हैं। वह विद्यादान करनेवाले ज्ञानी ब्राह्मण को धेनु, अन्न, धन, बल आदि प्रदान करता है। देखो, इन तपःपूत ज्ञानी ब्राह्मणों के अन्दर दिव्य गौएँ, अन्तःप्रकाश की दिव्य किरणें स्फुरित हो रही हैं, उसके अन्दर अदम्य आत्म–बल हिलोरें ले रहा है, बिना मांगे ही इन्हें गो–दुग्ध, अन्न, धन आदि अभीष्ट पदार्थ प्राप्त हो रहे हैं। यह सब इन्हें इनके विद्यादान के प्रतिफल में सोम प्रभु ने दिया है। इसी प्रकार वह स्व–स्व–कर्तव्य–निरत क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को उन–उनके योग्य ऐश्वर्य से सम्मानित कर कृतार्थ करता है। इसके अतिरिक्त सप्त–ऋषियों को वह वर प्रदान करता है। शरीर के अन्दर जो पंच–ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि ये सात ज्ञान के साधन निहित हैं ये ही सप्त–ऋषि हैं, इन्हें वह अभीष्ट वर–प्रदान से निहाल कर देता है। नेत्रों को दिव्य दृष्टि–शक्ति, श्रोत्रों को दिव्य श्रवण–शक्ति, रसना को दिव्य स्वादन–शक्ति, नासिका को दिव्य घ्राण–शक्ति, त्वचा को दिव्य स्पर्श–शक्ति, मन को दिव्य संकल्प–शक्ति, बुद्धि को दिव्य अध्यवसाय–शक्ति देकर कृतकृत्य कर देता है।

और भी उस सोम–प्रभु की लीला देखो। वह अन्धे और लंगड़े को भी तार देता है। अन्धे को आँखें देनेवाला, नेत्रहीन की प्रज्ञा–चक्षु देनेवाला, अज्ञानियों को ज्ञान–चक्षु देने वाला, अविवेकियों को विवेक की आँख देनेवाला वही है। वही लंगड़े को पैर प्रदान करता है, साधनहीन के भी समीप लक्ष्य–सिद्धि के साधन जुटा देता है। उसकी कृपा होने पर अन्धा चक्षुष्मान् से अधिक और विकल चरणवाला अविकल चरणवाले से अधिक सफलता प्राप्त कर सकता है – **जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे, अंधरे को सब कछु दरसाई।** हे सोम! तुम महान् हो, सचमुच महान् हो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

दो रास्ते

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी कह रहे थे–धन की निन्दा न मैं करता हूँ, न वेद करता है, न हमारे दूसरे शास्त्र करते हैं। परन्तु इस कमाई पर सौम्यता, सरलता और आध्यात्मिकता का रंग चढ़ाने की आवश्यकता है।

आगे धन की सार्वकालिक उपयोगिता की बात कही। नारायण जी और लक्ष्मी में हुआ एक संवाद सुनाकर यह सिद्ध किया कि संसारी लोग शासन और अधिकार की ओर अधिक भागते हैं। स्वयं नारायण भी लक्ष्मी के बिना नहीं रहते।

पुनः अपनी बात कहने लगे–व्यक्ति को धन–सम्पत्ति, अधिकार आदि से 'शान्ति' नहीं मिलती। 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः'। अधिक धन कमाना बुद्धिमत्ता नहीं।

शान्ति भगवान के लिए प्यार से प्राप्त होगी।

स्वामी जी ने 'प्रेमा' भक्ति की बात की ओर कहा प्रभु–प्यार और प्रेमाभक्ति से ही वह सौम्य गुण पैदा होता है जो मनुष्य को आध्यात्मिकता की बुलंदियों तक ले जाता है। इस प्रेम में कभी–कभी सिर भी देना पड़ता है। कुरबानी नहीं कर सकते तो प्रभु–प्रेम का नाम भी क्यों लेते हो।''

अब आगे....

यह 'अनुराग' शब्द भी बहुत महिमावाला है। इसका मतलब है किसी का हो जाना, किसी को अपना लेना, किसी के लिए सब–कुछ अर्पण कर देना। यह 'अनुराग' गुरू के लिए हो तो उसे 'श्रद्धा' कहते हैं, पति के मन में पत्नी के लिए या पत्नी के मन में पति के लिए हो तो उसे 'प्रेम' कहते हैं, पिता के मन में बेटे या बेटी के लिए हो तो उसे 'स्नेह' कहते हैं, और भक्त के मन में भगवान् के लिए हो तो उसे 'भक्ति' कहते हैं। सबका मतलब एक है। परन्तु यह 'अनुराग' मनुष्य को आध्यात्मिकता की ऊँचाई पर उस समय ले जाता है जब बेअन्त हो, अथाह हो–

छिन ही चढ़े छिन उतरे, सो तो प्रेम न होय।
जा घट प्रेम पिंजर बसे, प्रेम कहावे सोय।।

ऐसे प्रेम से कुछ बनता नहीं कि जप तो रहे हैं माला लेकर प्रभु का नाम और सोच रहे हैं मुकद्दमे की बात, दुकान की बात, घर की बात। यदि प्रभु का ध्यान भी है तो इसलिए कि 'प्रभु जी! मेरा मुकद्दमा जीत जाय, मेरी दुकान पर पड़े माल की कीमत दुगुनी हो जाय। मेरा घर दो मञ्जिला हो जाय।'

यह प्रेम नहीं है भाई, यह तो सौदा है। प्रेम करनेवाला सौदा नहीं करता। जिसके दिल में प्रभु के लिए सच्चा प्यार है उसे दूसरी कोई इच्छा रहती नहीं, दूसरी कोई चिन्ता भी रहती नहीं। आठ पहर, चौंसठ घड़ी वह मालिक से ही लौ लगाए रखना चाहता है–

आठ पहर चौंसठ घड़ी, लगा रहे अनुराग।
ह्रदय पलक न बीसरे, तब साँचा वैराग।।

ऐसी भक्ति, ऐसा प्रेम, ऐसा अनुराग जाग उठे तो मनुष्य में स्वयं सोम का गुण जाग उठता है, मुखमण्डल पर एक विचित्र मधुरता, वाणी में एक विचित्र मिठास, दिल में एक अनोखी मस्ती, व्यवहार में एक अद्भुत सरलता, स्वभाव में एक अजीब नम्रता–

यही है जिन्दगी अपनी, यही है बन्दगी अपनी,
कि उनका नाम आया, और गर्दन झुक गई अपनी।

ऐसे लोगों को दुनियावाले पागल भी कहते हैं। स्वामी रामतीर्थ घर–बार छोड़कर जाने लगे तो मित्र ने कहा–"तीर्थराम! तुम क्या पागल हो गए हो ? बच्चा है, युवती पत्नी है, घर–बार है, अच्छी– भली प्रोफैसरी करते हो, अच्छा वेतन मिलता है, यह सब–कुछ छोड़कर जंगलों की खाक छानना चाहते हो ? यह तो पागलपन की बात है। सब लोग कहते हैं कि रामतीर्थ पागल हो गया है।"

स्वामी राम ने मुस्कराते हुए कहा – "ठीक कहते हैं दुनियावाले कि मेरा दिमाग बिगड़ गया है, मैं पागल हो गया हूँ। यह प्रभु–प्यार का पागलपन है और यही मुझे अच्छा लगता है। तुम इसे समझ नहीं पाओगे और गाते हुए उन्होंने कहा–

thearyasamaj.org

इन्हीं बिगड़े दिमागों में भरे अमृत के लच्छे हैं।
हमें पागल ही रहने दो कि हम पागल ही अच्छे हैं।।

और पंजाब के सन्त बुल्लेशाह थे न, उन्होंने भी कहा–

"पा गल असली पागल हो जा।"

पंजाबी भाषा में 'गल' बात को भी कहते हैं, गर्दन को भी। 'असली' माला को भी कहते हैं और सचाई को भी। बुल्लेशाह का तात्पर्य यह था कि ' असली बात' को, हमेशा रहनेवाली सचाई को, उस परमपिता परमेश्वर को पा ले और फिर उसके लिए पागल हो जा।

और सुनो, जो इस प्रकार पागल होता है वह जबान से कुछ नहीं कहता। चला पड़ता है वह अपने प्रीतम को मिलने के लिए। मूलशंकर के मन में यह पागलपन जागा तो किसी से कुछ कहे बिना घर–बार छोड़कर चल दिए। माँ–बाप का मोह नहीं देखा, घर का आराम नहीं देखा। प्यार की चिंगारी जब मन में जागती है तो प्यार का दीवाना भूख और प्यास को नहीं देखता, सर्दी और गर्मी को नहीं, वर्षा और धूप को नहीं, कष्ट और क्लेश को नहीं। गर्जते समुद्र उसे खेल मालूम होते हैं, धधकती भट्टियों और तूफ़ानों में उसे कहकहे सुनाई देते हैं और वीरानों में मालिक की आवाज–

डूबत जरत न लाग कछु, तई जे लागी लाग।
जहाँ प्रीत काँची नहीं, क्या पानी, क्या आग।।

आग की लपटें उसके लिए फूलों की सेज बन जाती हैं जैसे प्रह्लाद के लिए बनीं। विष उसके लिए अमृत बन जाता है जैसा मीरा के लिए बना। गर्जते तूफ़ान, दरयाई लहरें उसके लिए माँ की गोद बन जाती है जैसे स्वामी रामतीर्थ के लिए बनीं। तब वह अटपटी–सी ऐसी बातें करता है जिन्हें दूसरे समझ नहीं पाते। अपने प्रभु के सिवा उसे कुछ सूझता नहीं। उसके सिवा कुछ अच्छा नहीं लगता। उसकी राह वह देखता है, उसका नाम वह पुकारता है–

अँखड़ियाँ तो झाईं पड़ीं पन्थ निहार निहार।
जिह्वा तो छाला पड़ा नाम पुकार पुकार।।

परन्तु यह अवस्था तब होती है जब पहले मन में प्यार की आग हो, मिलने की ऐसी इच्छा हो जो पागल कर दे, ऐसी प्यास जो किसी भी दूसरे तरीके से बुझे नहीं, तब प्रभु मिलते है जरूर–

पहले अग्नी विरह की, पीछे प्रेम पियास।
कहे कबीर तब जानिये, प्रभु मिलन की आस।।

कुछ लोग कहते हैं कि यह तो कठिन रास्ता है। क्या प्रभु को मिलने का कोई आसान रास्ता नहीं? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वह स्वयं ही, बिना किसी परिश्रम के मिल जाय? परन्तु ऐसा तो कोई रास्ता नहीं। जिसके मन में विरह की आग नहीं, जिसके दिल में प्रभु–मिलन की प्यास नहीं, उसे तो वह प्रभु कभी मिलता नहीं। और जिसके मन में यह प्यास है उसके अन्दर वे सभी गुण आ जाते हैं जो 'सोम' के गुण हैं। उसके अन्दर प्रेमा भक्ति जाग उठती है, बेअन्त मस्ती का सागर उसके सामने लहराने लगता है।

श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने जीवन में छः हजार कविताएँ लिखीं। उनकी मृत्यु का समय आया, वे बिस्तर पर थे, पास एक मित्र बैठा था। मित्र ने कहा– "महाकवि ! आपने जीवन में इतना कुछ लिखा। जो कहना था वह कह दिया। जो गाना था वह गा दिया, अब उदास क्यों हो? इस विश्वास के साथ खुशी–खुशी जाओ कि तुमने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया।"

महाकवि की आँखों मे अश्रु उमड़ आए; बोले–"क्या कहते हो भाई ! मैं तो अभी कुछ कह ही नहीं पाया। सोचता था कि अमुक बात कहनी है। शब्द बाहर आते थे, उनका अर्थ वह नहीं होता था जो मैं कहना चाहता था। अब कहने के योग्य हुआ हूँ, अब यह जाना है कि जो मन के अन्दर है उसे प्रकट कैसे करना है तो मृत्यु आ गई है। अब मैं न कह सकता हूँ, ना गा सकता हुँ। जब पहचानता नहीं था तो गा सकता था, अब पहचानता हूँ तो गा नहीं सकता।"

और यह बात बिल्कुल सच है। जो पहचान लेता है, जो जान लेता है उसके लिए बोलना और कहना कि उसने क्या जाना, क्या पहचाना, अत्यन्त कठिन हो जाता है।

मैने गंगोत्री में बैठकर "प्रभुदर्शन" नाम की पुस्तक लिखी। उसमें भी यह बात कही कि भक्त जब ध्यान में बैठता है तो प्रभु का दर्शन करता है। अत्यन्त मनमोहक दृश्य उसको दिखाई देते हैं–इतने प्यारे, इतने मधुर, इतने आनन्द देने वाले और मस्ती–भरे कि पूछो मत! इन्हीं में उस मनमोहन, प्रीतम, प्यारे प्रभु की छवि दिखाई देती है जिसकी कोई छवि नहीं, कोई रूप नहीं, कोई आकार नहीं। उस समय मालूम होता है कि ये ऐसे हैं, ऐसे हैं। परन्तु ध्यान का अन्त होते ही वह सब समाप्त हो जाता है। यही समझ नहीं आता कि जो देखा, वह क्या था। गूँगा आदमी जैसे कोई बहुत स्वादिष्ट वस्तु खाने के बाद बता नहीं सकता कि उसे कैसा आनन्द आया, ऐसी अवस्था होती है–

महाकवि की आँखों मे अश्रु उमड़ आए; बोले–"क्या कहते हो भाई ! मैं तो अभी कुछ कह ही नहीं पाया। सोचता था कि अमुक बात कहनी है। शब्द बाहर आते थे, उनका अर्थ वह नहीं होता था जो मैं कहना चाहता था। अब कहने के योग्य हुआ हूँ, अब यह जाना है कि जो मन के अन्दर है उसे प्रकट कैसे करना है तो मृत्यु आ गई है। अब मैं न कह सकता हूँ, ना गा सकता हुँ। जब पहचानता नहीं था तो गा सकता था, अब पहचानता हूँ तो गा नहीं सकता।"

गूँगे की रसना के सदृश अमीचन्द।
कैसे बताएँ कि क्या रस उड़ाया।।

परन्तु उस रस को पानेवाले बोल सकें या न बोल सकें, उनके अन्दर सौम्यता का प्रकाश जाग उठता है। प्रकाश जागता है अवश्य, परन्तु मन में जो आंनन्द जागता है इसकी बात कोई कह नहीं सकता। कितने ही दूसरे योगियों और महात्माओं को भी यह अनुभव हुआ। कि मनुष्य क्या कहे और क्या न कहे। यह 'अगम' की, उस परमात्मा की बात है जिसका कोई वर्णन नहीं कर सकता–

वाणी तो है अगम की, कहन सुनन की नाहि।
जा जानत बोलत नहीं, बोले सो जाने नाहिं।।

यह शब्दों से, भाषाओं से परे की बात है। केवल इतना पता है कि इस प्रेमा भक्ति से एक विचित्र खुमार, एक अजीब नशा, एक अद्भुत मस्ती मन के कोने–कोने में भर जाती है–

किसी के वास्ते जब दिल में प्यार होता है।
नफ़स नफ़स में जुनूं का खुमार होता है।।

यह है भक्ति ! आजकल की भक्ति तो भक्ति नहीं 'ठगती' बन गई है। कबीर जी ने ठीक कहा– ये भक्त भक्ति नहीं, मजदूरी करते हैं। एक घण्टा प्रभु के नाम का जाप किया और फिर लगे प्रार्थना करने– "प्रभु जी! हमको यह वस्तु दे दो, वह चीज दे दो।" उनमें और रेलवे स्टेशन पर सामान उठानेवाले कुली में अन्तर क्या है? वह भी थोड़ी देर परिश्रम करता है, फिर मजदूरी माँगता है; ये भी ऐसा ही करते हैं।

यह भक्ति नहीं मेरे भाई! यह तो खालिस 'कुलीगीरी' है। भक्ति वह है जो केवल प्यार के कारण की जाय, और प्यार वह है जो देता सब–कुछ है, माँगता कुछ नहीं।

आजकल लोग प्यार भी करते हैं तो एक विचित्र ढंग से। कहते हैं– "तुम हमारे घर आओगे, तो हमारे लिए क्या लाओगे? और हम तुम्हारे घर आएँगे तो हमें क्या खिलाओगे?" यह प्यार तो है नहीं, यह निपट स्वार्थ है। ऐसी भक्ति और ऐसे प्यार से वे गुण पैदा नहीं होते जो आदमी को 'सोम' बना देते हैं। इन गुणों के लाने के लिए परमात्मा से सच्चा प्यार, निष्काम प्यार मन में जगाना चाहिए।

मैं यह नहीं कहता कि दुकानदारी न करो। दुकानें भी चलाओ मेरे भाई! इस जग के अन्दर रहो भी। परन्तु–

न जग त्यागो न हर को भूल जाओ जिन्दगानी में।
रहो दुनिया में यूँ जैसे कमल रहता है पानी में।।

पानी में रहता है कमल, पानी में भीगता नहीं। पानी एक फुट ऊपर हो जाय तो यह भी एक फुट ऊपर हो जाता है, ऐसे रहो दुनिया के अन्दर–

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबगार नहीं हूँ।
बाजार से गुजरा हूँ खरीदार नहीं हूँ।।

अब यह तुम्हारा करोलबाग है न, मैं कई बार इसके बाजारों से गुजरा हूँ; खरीदा कुछ नहीं, खरीदने की जरूरत नहीं थी। मेरे लिए यह बाजार होकर भी न होने के बराबर है।

सो मेरे भाई !मेरी माँ !किसी–न–किसी से प्यार किए बिना आदमी 'सोम' के गुण नहीं पाता।

परन्तु यह 'किसी' कौन है? वह प्रीतम प्यारा परमेश्वर, जो अजर, अमर, अविनाशी है, जो कभी रुष्ट नहीं होता, जिससे अधिक सुन्दर अधिक मनमोहक, ज्यादा मधुर दुनिया में कुछ भी नहीं; बाकी लोग, बाकी चीजें तो आज हैं तो कल नहीं; कुछ दिनों, सप्ताहों या वर्षों के बाद रहेंगी नहीं। यह तो सब–कुछ जानेवाला है, समाप्त होने वाला है। इससे प्यार करके क्या लोगे–

किस सँग कीजे दोस्ती, सब जग चालनहार।
निश्चल केवल है प्रभु, उस सँग कीजे प्यार।।

परन्तु कैसा प्यार? वह जो रोम–रोम में रमा हो, जो एक क्षण के किए भी प्रीतम से बिछड़ना सहन न करे, जैसे मछली पानी से करती है–

अधिक स्नेही माछरी, दूजा अल्प स्नेह।
जब ही जल से बीछरे, तब ही त्यागे देह।।

प्यार उस प्रभु से करो जो सदा रहनेवाला है, और कैसे करो, यह सीखना हो तो मछली से सीखो। परन्तु अब तो समय हो गया जी, बात अधूरी रह गई, इसलिए बाकी बात कल सही।

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

महर्षि के मानव–मात्र पर चार विशेष उपकार

● खुशाहल चन्द्र आर्य

वैसे तो महर्षि दयानन्द के मानव–मात्र पर सैकड़ों नहीं सहस्रों उपकार हैं, जिनकी गिनती करनी असम्भव है। इस लेख में केवल चार उपकारों का संक्षिप्त वर्णन करते हैं, जिनको हम लोगों ने लगभग पाँच हजार वर्षों से प्रायः भुला दिया था। वे चार उपकार इस प्रकार हैं:–

1. सब का एक धर्म,वैदिक धर्म ही है:– सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत तक एक ही धर्म वैदिक धर्म को ही विश्व के सभी लोग मानते रहे। लगभग पाँच हजार वर्ष पहले महाभारत का भीषण युद्ध हुआ विश्व भर के सभी राजा, महाराजा, योद्धा, विद्वान व आचार्य युद्ध में काम आ गए। इस स्थिति में अविद्वान, स्वार्थी लोग ही विद्वान समझे जाने लगे और उन स्वार्थी लोगों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक मत–मतान्तर प्रचलित कर दिए जिससे लोग धर्म भ्रमित हो गए और विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड ही सत्य के रूप मे स्थापित हो गया और वैदिक धर्म प्रायः लुप्त हो गया और लोगों ने अन्धविश्वास, पाखण्ड रूपी अधर्म को ही धर्म मान लिया। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में कठोर तपस्या करके अनेक दुःखों व कष्टों को सह कर अपने सद्गुरू स्वामी बिरजानन्द की गोद में लगभग तीन साल बैठ कर पुनः प्रकाश किया, और करीब पाँच हजार वर्षों से जो लोग वैदिक धर्म का भूल गए थे और अनेक मत–मतान्तरों में फँस गए थे, उनको पुनः वैदिक धर्म में लाकर उनके जीवन को सफल बनाने के लिए एवं उनके जीवन में सुख व शान्ति लाने के लिए जो वैदिक धर्म पर चलने से ही सम्भव है, उनको वैदिक धर्म पर चलने की प्रेरणा दी और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसकी प्राप्ति के लिए ईश्वर, जीव को मनुष्य योनि में भेजता है।

महर्षि दयानन्द के आने से पहले, लोग अनेक मत–मतान्तरों में बटे हुए थे, उनके ग्रन्थ भी अलग–अलग थे जो सभी मनुष्यकृत थे। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी होने से उनके बनाए ग्रन्थों में भी अलगाव वाद का होना आवश्यक है। परन्तु महर्षि ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बदला कर विश्व को यह बतलाया कि मानव–मात्र का एक ही धर्म, "वैदिक धर्म" है और एक ही धर्मग्रन्थ, "वेद" हैं। इन्हीं को मानने से विश्व का कल्याण है अन्यथा परस्पर के भेद–भाव रहना निश्चित है।

2. सब का एक ही उपास्य देव "ओ३म्" है:– महाभारत युद्ध से पहले एक ही धर्म "वैदिक धर्म" था और एक ही उपास्य देव "ओ३म्" था। महाभारत के बाद अज्ञानी, स्वार्थी लोगों ने जहाँ अनेक मत–मतान्तर चला दिए, वहीं अनेक उपास्य देव भी चला दिए। अनेक मतों में शैव, वैष्णव व शाक्त मुख्य थे। शैवों ने शिव (महादेव) को, वैष्णवों ने विष्णु को और शाक्तों ने दुर्गा, काली, भैरव आदि को अपना उपास्य देव मानना आरम्भ कर दिया। ब्रह्मा को सृष्टि कर्त्ता, विष्णु को पालन कर्त्ता और शिव को संहार कर्ता बतलाकर तीनों को उपास्य देव मान लिया। श्री राम और श्री कृष्ण को विष्णु का अवतार बतलाकर ईश्वर के रूप में ही उपास्य देव मानना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार अनेक देवी–देवताओं की उपासना होनी आरम्भ हो गई। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में यह लिख कर भ्रम समाप्त कर दिया कि इन सभी देवताओं के नाम "ओ३म" के ही गुणों व कर्मों के नाम हैं, इसलिए एक "ओ३म्" की उपासना करने से ही सभी देवताओं की उपासना हो जाती है। "ओ३म्" ही सृष्टि को उत्पन्न करने वाला है, वही पालन करने वाला है और वही संहार करने वाला भी है इसलिए ब्रह्मा, विष्णु और शिव, तीनों ही देव "ओ३म्" में ही समाप्त हो जाते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में "ओ३म्" के एक सौ नामों का वर्णन है। इसलिए महर्षि ने बताया कि किसी अन्य देवता की उपासना न करके केवल "ओ३म्" की ही उपासना उसके गुणों का वर्णन करते हुए, उसके गुणों को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प करते हुए सन्ध्या द्वारा करनी चाहिए। यह बतला कर महर्षि ने सभी मनुष्यों को जोड़ने का काम करके मनुष्य–मात्र पर बड़ा उपकार किया है।

3. एक ही नाम "आर्य" था :– सृष्टि के आरम्भ में जितने भी मनुष्य थे, वेद ने उनको "आर्य" नाम से सम्बोधित किया है और वेदों में लिखा है "अहं भूमिम् अददाम आर्य्याय", हसका अर्थ है कि मैं ईश्वर, धर्मयुक्त गुण, कर्म, स्वभाव वालों के लिए पृथ्वी के राज्य को देता हूँ याना धर्म युक्त गुण, कर्म, स्वभाव वाले आर्य ही इस पृथ्वी का आनन्द ले सकते हैं और वेदानुकूल चलते हुए अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ में केवल दो किस्म के ही मनुष्य थे। गुण,कर्म, स्वभाव से अच्छे व्यक्तियों को "आर्य" कहा जाता था और उसके विपरीत खराब चाल, चलन व व्यवहार वालों को अनार्य कहा जाता था। अनाड़ी शब्द अनार्य का ही विकृत रूप है। महाभारत तक यही प्रथा चलती रही। रामायण, महाभारत की फिल्मों में हमने देखा है कि सीता ने श्री राम को सदैव "आर्यपुत्र" और द्रौपदी ने अर्जुन को सदैव आर्यपुत्र के नाम से सम्बोधित किया है।

महाभारत तक हमारा नाम "आर्य" और हमारे देश का नाम "आर्यावर्त्त" था। इसके बाद मुसलमानों ने सिन्धु नदी का अपभ्रंश करके हमें "इण्डियन" और हमारे देश को "इण्डिया" कहना आरम्भकर दिया। महर्षि दयानन्द का हमारे ऊपर बड़ा ऋण है कि उन्होंने हमारा प्राचीन नाम "आर्य" हमें याद कराया। वेद प्रचार करने तथा परोपकारी कार्यों को करने के लिए महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 में मुम्बई में की, इससे भी विश्व भर में वेद प्रचार तथा मानव कल्याण के कार्य काफी मात्रा में हो रहे हैं। यह भी महर्षि का हमारे ऊपर बहुत बड़ा उपकार है।

4. अभिवादन करने का एक ही तरीका "नमस्ते" है:– वैदिक धर्म का प्रचार जब तक रहा, तब तक सभी लोग परस्पर मिलने पर एक ही अभिवादन "नमस्ते" करते थे। बाद में वैदिक धर्म प्रायः लुप्त होने से अज्ञानतावश श्रीराम और श्रीकृष्ण को स्वार्थी लोगों ने इनको ईश्वर का अवतार बताया आरम्भ कर दिया, तब से जै श्री राम, जै श्री कृष्ण, राम राम आदि अभिवादन के रूप में कहना आरम्भ कर दिया। मुसलमान भाई वाले कुम सलाम सलाम वाले कुम अभिवादन में कहते हैं। अंग्रेज भाई गुड मोर्निंग, गुड नाईट, समय के अनुसार कह कर अभिवादन करते हैं। जो अपने हृदय का प्रेम–प्रदर्शन करने का उपयुक्त तरीका नहीं जान पड़ता है। महर्षि ने वेदों के आधार पर वही प्राचीन अभिवादन शब्द "नमस्ते" को उपयुक्त बताया और आर्य समाजियों को परस्पर मिलने पर "नमस्ते" का प्रयोग करने का आग्रह किया। आर्य जगत् में एक वेदों के प्रकाण्ड विद्वान पं. अयोध्या प्रसाद वैदिक रिसर्च स्कॉलर हुए हैं, जिनका अधिक समय कलकत्ता में ही बीता था। उनको आर्य समाज की तरफ से सन् 1933 मे शिकागो में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में भेजा गया था। वहाँ चर्चा का विषय अभिवादन के लिए उपयुक्त शब्द क्या होना चाहिए, यही था। सभी देश वालों ने अपने–अपने अभिवादन शब्द के सम्बन्ध में बताया। अन्त में पं. अयोध्या प्रसाद जी ने "नमस्ते" की इतनी सुन्दर व स्टीक व्याख्या की, जिससे सभी देश वालों ने "नमस्ते" को ही अभिवादन के रूप में सब से अधिक उपयुक्त समझा और इसी को सभी ने स्वीकार कर लिया। तभी से विश्वभर में "नमस्ते" का ही सब से अधिक प्रचलन है। महर्षि का अभिवादन में "नमस्ते" का पुनः प्रचलन करवाना, मनुष्य–मात्र पर एक बहुत बड़ा उपकार है।

180 महात्मा गान्धी रोड
(दो तल्ला) कोलकत्ता–700007
फोन 22183825,

डी.ए.वी. हरिपुरा में मनाया गया मंगल कामना दिवस

श्री गुरुश्री गुरु जम्भेश्वर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, हरिपुरा में विद्यार्थियों के नए सत्र के शुभारम्भ होने के उपलक्ष्य में मंगलकामना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विद्यालय की चैयरमेन श्रीमती करमजीत कौर ने इस यज्ञ में आहुति दी। विद्यालय के सभी अध्यापकों व कर्मचारियों यज्ञ में भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षा ने अपने संबोधन में छात्रों व अध्यापकों को नये सत्र के लिए शुभकामनायें दीं और कहा कि इस नये सत्र में अपने लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने के लिए पूर्ण मनोयोग से कड़ा परिश्रम करें।

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका– क्या वेदों में नाचने (डांस) का विधान है? अगर है, तो किसलिए?

समाधान– वेद में सिर्फ इतना नहीं लिखा कि सारे बस मोक्ष में ही जाओ। वेद में ऐसा नहीं लिखा कि डांस मत करो, धंधा भी मत करो। वेद में सब विहित कर्मों का विधान है अर्थात् नौकरी करो, व्यापार करो, खेती करो, उद्योग–धंधे चलाओ, फैक्ट्रियाँ चलाओ, कारखाने चलाओ, विद्वान बनो, राजा बनो, क्षत्रिय बनो, साइंटिस्ट बनो, पायलट बनो, शादी करो, बच्चे पैदा करो, उनका पालन करो, विद्वान बनाओ, उनको देशभक्त बनाओ, ईमानदार बनाओ और गीत भी गाओ, संगीत बजाओ और डांस भी करो।

इन सारे कार्यों को करो, पर इनकी सीमाएँ हैं और विकल्प (ऑप्शन) हैं। जिसको यहाँ संसार के सारे सुख लेने हों, वो संसार का सुख ले और जिसको मोक्ष में जाना हो, वो मोक्ष में जाए। दोनों के लिए अलग–अलग विकल्प हैं। सबके लिए सारे काम अनिवार्य (कम्पलसरी) नहीं हैं। जिसकी डांस करने की इच्छा नहीं है, उस पर थोपा–थोपी नहीं है कि तुम्हें डांस करना ही पड़ेगा। जिसकी मोक्ष में जाने की रुचि नहीं, तो उसके लिए भी कोई जबरदस्ती नहीं है कि तुमको मोक्ष में जाना ही पड़ेगा। आपकी इच्छा है, मत जाओ।

डांस करने की भी सीमा है। अपने जो प्राचीन भारतीय नृत्य होते थे – शास्त्रीय नृत्य, उनकी परंपरा अभी भी कुछ बची हुई है। जैसे कि कत्थककली, भरतनाट्यम। इस तरह के जो शास्त्रीय नृत्य (क्लासिकल डांस) होते हैं, वो अच्छे होते हैं। उनकी तो वेदों में छूट है। ऐसे डांस कर सकते हैं। उसमें सभ्यता भी होती है, शरीर भी अच्छी तरह से ढका होता है, कपड़े भी ठीक पहने होते हैं और अच्छी सुंदर व्यवस्था भी होती है। सब अच्छी तरह से करते हैं, वो अच्छा लगता है।

जिसकी अभी मोक्ष में रुचि नहीं है, जिसको वैराग्य नहीं हुआ, तो वह अपना टाइमपास कैसे करेगा? उसको अपना टाइमपास करने के लिए मनोरंजन चाहिए। वो अच्छे गीत गाए और अच्छे डांस करे।

वेस्टर्न वाले डांस नहीं। ऐसे उल्टे–सीधे, वो हड्डियाँ–वड्डियाँ तोड़ के करते हैं, वैसा ब्रेक–डांस नहीं करना। उससे मन, बुद्धि खराब होती है।

जो अपने भारतीय ढंग के डांस हैं, वे अच्छे हैं। उससे चित्त शुद्ध रहता है। अपने भारतीय संगीत हैं, शास्त्रीय संगीत (क्लासिकल म्युजिक) हैं। जिनमें राग–भैरवी, बागेश्वरी और इस प्रकार अच्छे–अच्छे मालकौंस आदि राग हैं, वे सब गा सकते हैं। उनमें भी प्रधानता ईश्वर–भक्ति की रहनी चाहिए। भरतनाट्यम्, कत्थककली और दूसरे कुच्ची–पुड़ी आदि भारतीय डांस होते हैं, इनमें बहुत सारी ईश्वर उपासना की बातें होती हैं। इनमें बहुत सारी धार्मिक लोककथाओं के माध्यम से ईश्वर–भक्ति का मंचन होता हैं अर्थात् भरतनाट्यम् आदि डांस में जो हाव–भाव दिखाए जाते हैं, वे हमें ईश्वर की ओर श्रद्धा–भक्ति उत्पन्न करते हैं। वे पश्चिमी नृत्यों की तरह काम–वासना को नहीं जगाते। इसलिए जिनकी डांस में रुचि हो, वे ऐसे अच्छे डांस कर सकते हैं।

शंका– क्या सोचने में दोष होने से, व्यक्ति सुख से जीना चाहने पर भी, सुख से नहीं जी सकता?

हाँ, यह बिल्कुल ठीक बात है। अगर सोचने में दोष है, सोचना ठीक से नहीं आता तो आप कितना ही सुख से जीना चाहें, इच्छा आपकी कुछ भी हो, लेकिन सुख से नहीं जी सकते। सोचने को पहले ठीक करना पड़ेगा।

जिसका सोचने का ढंग ठीक है, वो सुखी है। और जिसका सोचने का ढंग गलत है, वो दुःखी है।

प्रश्न उठता है कि – सोचने का सही ढंग क्या है? उत्तर है– वहीं तीन शब्द **"कोई बात नहीं"** । आपने "गीता सार" पढा होगा कि–

"क्या हो गया, उसने तुम्हारा क्या छीन लिया, जो कुछ लिया, यहीं से लिया और जो कुछ दिया, यहीं पर दिया, तुम क्या लाए थे, जो तुम्हारा खो गया, तुम्हारा क्या चला गया, तुम क्यों रोते हो, कुछ नहीं गया, सब भगवान का था और छीन लिया तो भगवान का गया, आपका कुछ नहीं गया।"

ये ध्यान रहे कि, यहाँ आध्यात्मिक–भाषा चल रही है। इसको लौकिक–भाषा में फिट मत कर देना, नहीं तो गड़बड़ हो जाएगी। आप कहेंगे कि पाकिस्तान, कश्मीर को छीन कर ले गया, तो तुम्हारा क्या ले गया! वहाँ यह नियम नहीं चलेगा। वो लौकिक–क्षेत्र है। वो क्षेत्र अलग हैं, आध्यात्मिक क्षेत्र अलग है।

हम जब संसार में आए, जन्म लिया, हमारे पास कुछ भी नहीं था। खाली हाथ आए थे और जब जाएँगे, तब खली हाथ जाएँगे। फिर हमारा तो कुछ था ही नहीं। आध्यात्मिक दृष्टि से तुम्हारा कुछ नहीं था। और अगर किसी ने थोड़ा बहुत छीन भी लिया, तो भगवान बैठे नहीं हैं क्या? वे

देखते नहीं हैं क्या?

आप संध्या में छह बार तो सुबह बोलते हैं और छह बार शाम को बोलते हैं– "योस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्त वो जम्भे दध्मः" अर्थात् जो हमसे द्वेष करते हैं, हम पर अन्यास करते हैं, जो भी गड़बड़ करते हैं, उसको हम ईश्वर के न्याय पर छोड़ देते हैं। आप अपने साथ किए गए अन्याय को ईश्वर के न्याय पर तभी तो छोड़ेंगे, जब आप बोलेंगे–"कोई बात नहीं।" यह उसी का अनुवाद है। भगवान बैठे हैं, नुकसान या द्वेष को ईश्वर के न्याय पर छोड़ दो। भगवान अपने आप न्याय करेगा।

हम झगड़े में पड़ेंगे तो हमारा योगाभ्यास बिगड़ जाएगा। हम ध्यान नहीं कर पाएँगे। हर समय हमारे मन में वही व्यक्ति याद आएगा, जिसने हम पर अन्याय किया, जिसने हमसे द्वेष किया। हम बस उसी को याद करते रहेंगे, और संध्या, ध्यान आदि कुछ नहीं होगा।

सीख यही है कि, ठीक ढंग से सोचेंगे, तो हम सुख से जीएँगे। और गलत ढंग से सोचेंगे, तो हम कितना ही सुख से जीना चाहें, नहीं जी पाएँगे। आओ हम, पहले सोचने का दोष ठीक करें।

योगदर्शन महाविद्यालय
रोजड वन गुजरात

गुरुकुल कांगड़ी में महाभारत विश्वकोश पर हुई कार्यशाला

महाभारत भारत राष्ट्र का ऐसा अनमोल ग्रन्थ है, जिसमें पूरी भारतीय संस्कृति समाहित है। यदि हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति के एक ही स्थान पर संपूर्ण दर्शन करने हों तो महाभारत में कर सकते हैं।" यह शब्द महाभारत विश्वकोश निर्माण हेतु पांच दिवसीय कार्यशाला के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. पंकज मित्तल, कुलपति भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय सोनीपत बोल रहीं थीं। उन्होंने कहा कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में महाभारत विश्वकोश का निर्माण एक अतुलनीय कार्य होगा जोकि हमारी भावी पीढ़ी के लिए मार्ग दर्शक भी होगा। विशिष्ट अतिथि प्रो. कपिल कपूर ने कहा कि यह एक श्रेष्ठतम कार्य है। हमने इसको कार सेवा के द्वारा ही पूर्ण करना है जिसमें किसी भी स्रोत से कोई सहायता नहीं ली जा रही है। उन्होंने कहा कि हमारी आज की पीढ़ी पर भारतीय संस्कृति के स्थान पर पाश्चात्य संस्कृतियाँ अधिक प्रभावी हैं, ऐसे में हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी युवा पीढ़ी को सही मार्ग दर्शन दें। उन्होंने कहा कि भारतीय मूल ज्ञान की ओर बढ़ा यह एक पहला कदम है। प्रो. कपूर ने कहा कि युवा पीढ़ी हमारी वैदिक मान्यताओं, मूल्यो का संवाहक बनेगी। आज इस माध्यम से हम अपनी जड़ों की ओर जा रहे हैं।

कुलसचिव प्रो. विनोद शर्मा ने अभ्यागतों का स्वागत किया। प्रो. श्रवण शर्मा ने संचालन किया।

कार्यशाला में श्रीमती उमाशर्मा, श्रीमती नीलिमा शर्मा, डॉ. अर्चना शर्मा, डॉ. किरण भट्ट, डॉ. डी. आर. पुरोहित, डॉ. करुणा शर्मा आदि ने विशेष योगदान दिया।

thearyasamaj.org

ईश्वर स्तुति के लाभ

● नरेन्द्र आहुजा 'विवेक'

ईश्वर में आस्था ना रखने वाले लोग अक्सर यह पूछते हैं कि जब मनुष्य अपने कर्म करने के लिए स्वतंत्र है और वह किसी कार्य को करने ना करने अथवा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र है तो वह ईश्वर की स्तुति क्यों करे। और फिर ईश्वर को न्यायकारी कहा जाता है तो वह न्यायकारी ईश्वर प्रशंसा, चाटुकारिता या स्तुति का भूखा नहीं है और ना ही हमारे स्तुति करने से वह अपनी न्याय व्यवस्था भंग करके स्तुति करने वालों को उनके दुष्कर्मों का दंड ना देकर उनकी स्तुति से प्रभावित होकर क्षमादान देते हुए अच्छी नियति पुरस्कार स्वरूप देगा। अब यदि न्यायकारी ईश्वर स्तुति करने पर भी न्याय व्यवस्था को भंग नहीं करेंगे तो प्रश्न उठता है कि ईश्वर स्तुति के क्या लाभ हैं?

क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में जहाँ स्तुति को परिभाषित किया हैं वहीं साथ ही साथ स्तुति के लाभ भी बतला दिए हैं। ईश्वर की स्तुति करना हम मनुष्यों का प्रथम कर्तव्य नैतिक दायित्व बन जाता है। सृष्टिकर्ता परमपिता परमेश्वर ने हम सभी मनुष्यों के उपयोग के लिए ही इस समस्त प्रकृति और इसके ऐश्वर्यों की रचना की है और हम मनुष्य अपने पूरे जीवन ईश्वर प्रदत्त ऐश्वर्यों का दोहन करते हैं हमें प्राण वायु, सूर्य की रोशनी ऊष्मा, खाने के लिए विविध प्रकार की वनस्पति, धरती माता के गर्भ से निकले खनिज पदार्थ आदि हर वस्तु परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ही तो है। इस पर भी यदि हम उस सृष्टिकर्ता पालनकर्ता परमपिता की स्तुति नहीं करते तो निश्चित रूप से हम कृतघ्नता दोष के भागी बनेंगे। वैसे भी लौकिक जीवन में यदि गर्मी के मौसम में प्यास लगने पर कोई एक लोटा शीतल जल पिला दे तो हम उसका धन्यवाद अवश्य करते हैं और वहीं दूसरी ओर ईश्वर जिसने हमें जीवन और जीवन में उपयोग की समस्त सामग्री दी उसकी स्तुति करना हम जरुरी नहीं समझते।

ईश्वर की स्तुति करने से अनेकों प्रत्यक्ष लाभ स्पष्ट दिखाई देते है। ईश्वर की स्तुति करते समय हम जिन ईश्वरीय गुणों की चर्चा करते हैं उन गुणों की अपने जीवन में ग्राह्यता को बढ़ाते हैं। ईश्वरीय गुणों को गाते समय जब हम कहते हैं कि ईश्वर दयालु है तो दया का भाव हमारे जीवन में भी आए ऐसी अपेक्षा रखते हैं और हम भी अपने साथियों सहयोगियों या अपने ऊपर आश्रितों पर दया का भाव दिखाएँ। हमने ईश्वर को न्यायकारी कहा तो अपने जीवन में अपने पद पर बैठ कर हम भी इस गुण का पालन करें। अर्थात किसी भी स्वार्थ की भावना के वशीभूत हम न्याय आचरण को कदापि नहीं त्यागें। ईश्वर स्तुति करते हुए हम भी ईश्वर प्रदत्त वेदज्ञान का स्वाध्याय करते हुए अप ज्ञान में वृद्धि करने का प्रयास करें। इस प्रकार की ईश्वरीय गुणों को गा लें लेकिन इन गुणों का समावेश अपने जीवन में ना करें तो हमारी स्थिति उस जड़ टेपरिकार्डर सरीखी हो जाएगी जो केवल बज सकता है। अतः स्तुति करते समय जिन ईश्वरीय गुणों को हम याद करें उनको अपने जीवन में धारण करने का प्रयास पुरूषार्थ भी अवश्य करें।

ईश्वरीय गुणों की स्तुति से हमारी ईश्वर के प्रति प्रीति बढ़ती है। ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को जान मान कर हम गुणगान करते हैं और उन्हें अपने जीवन में धारण करने का पुरुषार्थ करते हैं तो निश्चित रूप से हमारी प्रीति उस परमपिता परमेश्वर से बढ़ती है और हम अपने जीवन को ईश्वरीय पारस के संसर्ग से उन्नत कर सकते हैं। ईश्वरीय गुणों के गुणगान से हमारे अंदर निरभिमानता आती है अर्थात हमारे झूठे अहंकार का भाव समाप्त हो जाता है क्योंकि हम परमपिता परमेश्वर को सर्वश्रेष्ठ जान मान कर समर्पण भाव से स्तुति गान करते हैं। ईश्वर की स्तुति करने से हमारी आत्मा में आद्रता का भाव उत्पन्न होता है जो गुणों की ग्राहयता को बढ़ाता है।

इस प्रकार हमें सदा दैनिक नित्य कर्म के रूप में ईश्वर की स्तुति अवश्य करनी चाहिए।

502 जी एच 27
सैक्टर 20 पंचकूला
मो. 09467608686

आत्मा व आत्म हनन

● भारतेन्दु सूद

हमारा मन किस प्रकार दिशा लेता है, यह आत्महनन को समझने के लिए आवश्यक है। जब भी हमारे मन में कोई विचार आता है या फिर इच्छा जागती है, आत्मा हमारी बुद्धि को संदेश भेजती है। बुद्धि व्यक्ति के विवेक के अनुसार मन को दिशा देती है और मन ज्ञानेद्रियों को कार्य में लाता है।

अगर हम ध्यान से देखें तो मन को दिशा देने में आत्मा व विवेक का बहुत बड़ा योगदान है। अब प्रश्न उठता है क्या सब व्यक्तियों की आत्मा व विवेक एक स्तर का है? इसका जवाब है---- बिलकुल नहीं।

ऋषि मनु ने कहा है, जल शरीर को साफ करता है, सत्य मन को पवित्र करता है, विद्या व तप आत्मा को शुद्ध करते हैं व ज्ञान से बुद्धि की शुद्धि होती है। इससे एक बात स्पष्ट है कि व्यक्ति ने अपनी आत्मा को कितना शुद्ध किया है वह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या उसने सही ज्ञान प्राप्त करके तप किया है। अर्थात अकेला ज्ञान ही काफी नहीं तप उससे भी आवश्यक है। सेवा, परोपकार, दान, दया, यज्ञ, तप, त्याग एकान्तवास आत्मा को उन्नत करने में सहायक होते हैं। अगर विद्या व तप द्वारा आत्मा को शुद्ध किया हुआ है तो आत्मा जो संदेश बुद्धि को देगी वह उत्तम मार्ग की ओर से जाने वाला होगा।

अब हम विवेक के कार्य को समझते हैं। विवेक का सीधा अर्थ है ठीक व यथार्थ ज्ञान। वास्तव में विवेक वही काम करता है जो कि हंस पक्षी करता है। हंस पक्षी के सामने यदि जल मिला दूध रख दिया जाए जो वह दूध तो पी लेता है पर जल को छोड़ देता है। यानी दूध का दूध व पानी का पानी कर देता है। विवेकी मनुष्य भी इसी प्रकार ठीक क्या है' उस को समझने की शक्ति रखता है। उदाहरण के लिए अगर किसी विवेकी मनुष्य से कहा जाए कि गणेश की प्रतिमा दूध पी रही है तो वह बिना कुछ देर लगाए यह कह देगा कि यह सम्भव नहीं। क्योंकि वह विवेक द्वारा जानता है कि कोई भी निर्जीव वस्तु वह क्रिया नहीं कर सकती जो कि सजीव वस्तु करने के सक्षम है। विवेकी मनुष्य कभी किसी तरह की भ्रान्ति में नहीं रहता, कभी डाँवाडोल नहीं होता। उसकी स्थिति गुफा के भीतर रखे उस दीपक के समान होती है जिसकी ज्वाला स्थिर रहती है बाहर चाहे कितने भी आन्धी तूफान चले। अर्थात अगर बाहर लाखों लोग गणेश की प्रतिमा को दूध पिला रहे हैं तो भी वह अपने विश्वास से डगमगाएगा नहीं।। हम यह भी कह सकते हैं कि विवेक वह शक्ति है जो अच्छे बुरे में फर्क देखने की सोच प्रदान करती है। Capacity to discriminate between good and bad

इस तरह हम कह सकते हैं अगर मनुष्य में ज्ञान, तप और विवेक है, तो उसके मन को जो संदेश मिलेगा वह सही होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुलास में लिखा है कि ज्ञान और तप से हमारी आत्मा सत्य व असत्य, ठीक और गलत को समझने के सक्षम हो जाती है। श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वालों को परमात्मा भी सावधान कर देता है। जब व्यक्ति कोई दुष्कर्म करने चलता है तो उसकी आत्मा और विवेक उसको सावधान करते हुए कहते हैं---- तू यह मत कर और उसको करने में उसको भय, लज्जा और शंका उत्पन्न होती है। यहाँ पर दो प्रकार का Reaction देखने में आता है। जो व्यक्ति भगवान को मानकर उसके सान्निध्य में रहता हैं उसे ईश्वरीय गुण गलत रास्ते पर जाने से रोक लेते हैं। और यदि वह गलती कर भी ले तो दयालु परमात्मा की कृपा से उसे एक दम गलती का बोध हो जाता है और वह अपने कदम वापिस खींच लेता है। साथ ही वह आगे ऐसी गलती न करने की शपथ लेता है। दूसरे वे व्यक्ति होते हैं जो न तो भगवान के ठीक स्वरूप को समझे होते हैं और न ही ईश्वर पर उनका पूर्ण विश्वास ही होता है। वे लोभ और स्वार्थ से वशीभूत हो कर अपनी आत्मा की आवाज् को ठुकरा देते हैं और उसी दुष्कर्म को करने में प्रवृत्त हो जाते हैं। दो चार बार उनकी आत्मा उनको रोकती है जब मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार के वशीभूत होता है तो आत्मा की आवाज दब जाती है और वह दुष्कर्म करने का आदी हो जाता है। इसे आत्महनन कहा गया है। एक बार जब व्यक्ति दुष्कर्म करने का आदी हो जाता है तो उसे आत्मा की आवाज सुननी बन्द हो जाती है

हमारे समाज में अपराधी दो तरह के हैं। एक वह जो एक बार आत्मा की आवाज को अनसुना कर गलती कर बैठते हैं, उन्हें अपने किए पर पश्चात्ताप होता है। दूसरे वे जिन्होंने अपनी आत्मा का हनन कर दिया होता है उन्हें अपराध करने के बाद कोई पश्चात्ताप नहीं होता और एक के बाद दूसरा अपराध करते हैं व इस तरह काम खत्म नहीं होता। इसलिए यह जरुरी है कि हम अपनी आत्मा का हनन न करें। यह तभी सम्भव है जब हम ईश्वर के सान्निध्य में रह कर ईश्वरीय गुणों को धारण करते रहें।

मनुष्यों को तीन श्रेणी में बाँटा गया है

पहली श्रेणी में वे है जो आत्मा की आवाज को किसी भी हालत में अनसुना नहीं करते। जिस काम के लिए आत्मा हाँ करती है उसे ही करते हैं। आत्मा परमात्मा में रत रहती है। ऐसे व्यक्ति उच्चतम श्रेणी में आते हैं।

दूसरी श्रेणी में वे हैं जो मन की तो करते हैं पर आत्मा की भी सुनते हैं। आत्मचिन्तन और आत्मनिरीक्षण करते रहते हैं।

तीसरी श्रेणी में वे हैं जो आत्मा की आवाज को नहीं सुनते हैं और आत्महनन करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति निकृष्ट व अधम श्रेणी के कहलाए जाते हैं। जो भी समाज में अधर्म और बुराईयाँ है, इन्हीं व्यक्तियों के कारण हैं।

हमें यह याद रखना चाहिए कि ईश्वर सब की आत्मा में बैठा है और प्रत्येक कार्य से पूर्व सब को सत्योपदेश कर रहा है। जो व्यक्ति उसके संकेत को समझ लेता है और उस के अनुरूप चलता है वह बहुत सी बाधाओं से बच जाता है। केवल मात्र ईश्वर को मानने से प्रयोजन सिद्ध नहीं होता बल्कि महत्व यह रखता है कि हम इस का कितना लाभ ले रहे हैं।

सम्पादक, वैदिक थोट्स
231/45- A, चण्डीगढ़ -160047
9217970381

thearyasamaj.org

आंतकवादियों व दुर्दान्त अपराधियों से निपटने का अन्तिम निदान; पुलिस अधिकारियों के पक्ष का एक निष्पक्ष अध्ययन

● हरिकृष्ण निगम

पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों की अहर्निश गतिविधियों के बावजूद अपराध की सुनामी लहरों का कहर देश के हर कोने में फैल चुका है। एक ओर जहाँ हमारी कानूनी प्रक्रिया कभी-कभी इतनी लाचार सिद्ध होती है कि आतंकवादी या शातिर अपराधी पकड़े जाने पर भी कभी जमानत पर या कभी मानवाधिकार संगठनों या अंग्रेजी मीडिया के दुष्प्रचार से बच निकलते हैं अथवा न्यायालयों में उनके प्रकरणों के निपटान में 5-10 वर्ष भी लग जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के अंशों व उद्धरणों में एक एनकाउन्टर स्पेशलिस्ट, एक वकील और मानवाधिकार आयोग के कार्यकर्ता मिहिर देसाई के साक्षात्कार के आधार पर पुलिस के मुठभेड़ के अधिकार (या अनधिकार) पर निष्पक्ष चर्चा मुम्बई विश्वविद्यालय की एक पल्लवी कदम शोध छात्रा द्वारा की गई है। निम्न लिखित शोध पत्र का सांराश पाठकों को रोचक लगेगा, क्योंकि यह भी पाया गया है कि 90 प्रतिशत जनता पुलिस के साथ पाई गई है जब कि 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' और कुछ अंग्रेजी दैनिक आंतकवादियों का समर्थन करते दीखते हैं। गरवारे इन्स्टीट्यूट ऑफ कैरियर एज्जुकेशन एण्ड डेवलेपमेन्ट के हिन्दी पत्रकारिता विभाग की परास्नातक शोध छात्रा की स्नातकोत्तर उपाधि में यह अध्ययन विशेषज्ञों द्वारा प्रशंसित किया गया है। पल्लवी कदम का यह निष्कर्ष साहसिक कहा जा सकता है कि फर्जी मुठभेड़ के मामलों में फँसे पुलिस अधिकारो बहुधा राजनीतिज्ञों या गैंगस्टरों के दबाव में आकर ऐसा करते हैं और उनकी कई बार पोल भी खुल चुकी है। पर उनके सूत्रधारों का बाल भी बाँका नहीं होता है

मुठभेड़ क्या है ? फर्जी मुठभेड़ क्या है ? आखिर क्यों पुलिस फर्जी मुठभेड़ का रास्ता अपनाती है। इन सभी सवालों के जवाब मेरे शोधपत्र के माध्यम से मुझे मिले। इस विषय से जुड़ी जानकारी मिलना काफी मुश्किल था। मैंने अलग-अलग स्थानों से जानकारी जुटाने की कोशिश की है। मुठभेड़ से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए मुझे पुलिस से भी बात करनी पड़ी। मिरा रोड विभाग के असिस्टेंट पुलिस इन्स्पेक्टर पी.एस.वाव्हल से मैंने बातचीत की है।

पुलिस से मुठभेड़ के मामले मिलना आसान थे। पर फर्जी मुठभेड़ के उदाहरण मिलने कठिन थे। फिर मैंने वकील तथा मानवाधिकार आयोग कार्यकर्ता मिहीर देसाई से भी चर्चा की। मुझे फ़र्ज़ी मुठभेड़ के मामले भी प्राप्त हुए। मानवाधिकार आयोग इस दिशा में किस प्रकार कार्यरत है इससे भी उन्होंने मुझे परिचित कराया।

पुलिस की भूमिका

किसी भी कार्य को निभाते वक्त उस कार्य को करने का हेतु बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। ऐसे ही यदि हम पुलिस के कार्य को देखें तो उनका स्वभाव भी प्रसंग या घटना के अनुसार बदलता है। हम उदाहरण ले सकते हैं असिस्टेंट पुलिस इन्स्पेक्टर पी. एस.वाव्हल का वे जब भी अपने मिशन पर होते हैं उनका कार्य उनके लिए महत्त्वपूर्ण होता है। अपराधियों को पकड़ते वक्त वे किसी की जान की परवाह नहीं करते। जब मैंने उनसे इस बारे में चर्चा की तो उनका कहना था कि,

"हम जब किसी अपराधी को गिरफ्तार करने निकलते हैं, तो एक बात मन में तय करके जाते हैं कि आज शायद मुझे किसी की जान भी लेनी पड़ेगी, तो भगवान मुझे माफ कर देना।"

पुलिस की भूमिका तीन प्रमुख भागों में विभाजित है:

1) न्याय द्वारा निश्चित की गई भूमिका,
2) जनता की सुरक्षा के लिए और,
3) सरकार द्वारा निश्चित की गई भूमिका (सरकारी क्षेत्रों में आवश्यक भूमिका)।

इन तीन भागों में पुलिस भूमिका को विभाजित जरूर किया जाता है लेकिन हर आदमी की मानसिकता अलग-अलग होती है। कई बार ऐसा होता है कि पुलिस उनकी भूमिका निभाते वक्त मुश्किल में आती है। उदाहरण के लिए जब विद्यार्थियों का समूह अपने अध्यापकों, के विरुध्द आंदोलन करता है तब विद्यार्थी चाहते हैं कि पुलिस उनके हक में काम करे। पर अध्यापक चाहते हैं कि पुलिस उनकी बात सुने। इस बीच पुलिस अपनी भूमिका को कैसे निभाती है यह जानने की भी कोशिश मैंने की। पुलिस का कहना है कि हम हर एक मामले के लिए अलग-अलग विभाग रखते हैं। जैसे; चोरी के मामले, जुर्म के मामले, डकैती के मामले आदि के लिए स्पेशल स्क्वॉड रखते हैं। ताकि किसी एक के ऊपर ज्यादा भार न हो। अतः यह कन्फम करने की जरूरत है मे एक विधेयक पास किया गया था, जिसमें पुलिस की भूमिका को निर्धारित किया गया है। उसी के अनुसार पुलिस आज भी अपनी भूमिका निभा रही है। ? में बनाए गए विधेयक में उन अधिकारों को समाविष्ट नहीं किया गया है जो आधुनिक परिस्थितियों में महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। जैसे ही दिन बीतते गए अधिकारों की सूची में भी काफी बदलाव आया है। अब पुलिस की भूमिका नीचे दिए गए मुददों पर निर्भर करती है।

1. शांति बरकरार करना;
2. अपराध को रोकना;
3. सरकारी खजाने की सुरक्षा;
4. अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाना आदि।

वैसे तो सूची काफी लंबी हो सकती है। लेकिन उपर्युक्त मुद्दे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। पुलिस का सबसे बड़ा कर्तव्य अपने अधिकारियों की आज्ञा का पालन करना है। पुलिस न ही न्याय का औजार है और न ही अपराध का हिस्सा, पर पुलिस एक ऐसी प्रक्रिया का हिस्सा है जिसे न्याय का पालन करना है, अपराध के खिलाफ सबूतों को जुटा कर उन्हें रोकना है।

आज के पुलिस अधिकारियों की भूमिका पर नजर डालें तो लगता है कि उनमें काफी बदलाव आए हैं। वे अपने पद पर बने रहने के लिए राजनीति या फिर गेंगस्टर की मदद लेते हैं। पहले तो उनकी भूमिका न्याय द्वारा निश्चित होती थी। लेकिन अब उनकी भूमिका को निर्धारित करने में सबसे बड़ा हाथ राजनीति या गेंगस्टर का नजर आता है।

फ़र्ज़ी मुठभेड़

फर्जी मुठभेड़ क्या है? यह जानने से पहले मुठभेड़ क्या है? यह जानना जरूरी है। मुठभेड़ का सामान्य शब्दों में अर्थ होगा, 'मार डालना'। मुठभेड़ का अधिकार पुलिस को सुरक्षा के लिए दिया गया है। लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं है कि पुलिस उनके मन मुताबिक किसी को भी गोली से उड़ा दे। यह एक ऐसी स्थिति होती है जब पुलिस की नजर में आपराधिक मामलों से जुड़े हुए व्यक्ति को पकड़ते वक्त वह व्यक्ति यदि हिरासत में आने से इनकार करे और पुलिस पर गोली चलाए तो ऐसी स्थिति में पुलिस उस पर गोली चला सकती है। ऐसी स्थिति में अपराधी कई बार मारे जाते हैं। इसे 'मुठभेड़' कहा जाता है।

कई बार पुलिस आत्मरक्षा के लिए संदिग्ध अपराधी पर गोली चलाती है। पर गोली पहले पाँव पर या फिर कमर के नीचे चलायी जानी चाहिए। पर पुलिस गुस्से में आकर या फिर किसी और दवाब में अपराधी को मार डालती है। इसे ही 'फ़र्ज़ी मुठभेड़' कहा जाता है।

जब मैंने पुलिस से मुठभेड़ की परिभाषा जाननी चाही तो उनका कहना था:

'मुठभेड़' मीड़िया द्वारा निर्माण किया हुआ शब्द है। पुलिस इसे 'एक्सचेंज ऑफ फायर' कहती है। पुलिस ऐसे ही किसी को नहीं मारती। जब अपराधी हिरासत में आने से इनकार करे और पुलिस पर गोली चलाए तो पुलिस अपने बचाव के लिए उस अपराधी पर हमला करती है।

शांति हमारे लिए आज एक सपना बनकर रह गई है। शांति जैसी मूल्यवान चीज हमें ढूँढनी पड़ती है। अपराध जिसका हम खातमा करना चाहते हैं वह भारत सहित दुनिया के हर कोने में घुसपैठ कर रहा है। छोटा शकील, छोटा राजन, दाऊद, अरूण गवली जैसे गेंगस्टर व उनके साथी सरेआम घूम रहे हैं। गेंगस्टर बमविस्फोट, शूटआऊट करके लोगों में दहशत का माहौल पैदा कर रहे हैं। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए पुलिस को मुठभेड़ का अधिकार दिया गया है। आजकल पुलिस शांति के नाम पर अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल कर रही है। वकील मिहिर देसाई ने मुझे एक फर्जी मुठभेड़ का उदाहरण दिया है। वह मुठभेड़ असली थी या नकली यह अभी तक पूरी तरह साबित नहीं हो पाई है।

वकील मिहिर देसाई बताते हैं, मुंबई के एक 'शॉपिंग मॉल' में कुछ दिनों पहले एक मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ मे दो लोग मारे गए जिन्हें आंतकवादी करार दे दिया गया था। कुछ ही दिनों बाद मुठभेड़ विवादों के घेरे में आ गई।

मुठभेड़ पर सवाल उठते ही जा रहे थे और उसमें एक नया मोड़ आया । मुठभेड़ हादसे के थोड़े दिनों बाद एक व्यक्ति ने खुद के गवाह होने का दावा किया। उस व्यक्ति ने एक बयान में कहा शॉपिंग मॉल के सबसे निचले विभाग में तीन आदमी थे। जिनके पास एक भी हथियार नहीं था। उनको पुलिस ने गोली से उड़ा दिया और अब मुठभेड़ बता रही है।

पुलिस ने इस बात का खंडन किया। पुलिस ने बताया वह व्यक्ति उस वक्त निचले विभाग में मौजूद ही नहीं था।

यह एक 'फ़र्ज़ी मुठभेड़' का उदाहरण था। इस घटना के बाद सीआईडी को मुठभेड़ की जाँच के आदेश दिए थे। सीआईडी टीम ने पहले उस व्यक्ति का बयान लिया। लेकिन वह व्यक्ति भी अपना

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 07 का शेष

आंतकवादियों व दुर्दान्त...

बयान बदलता रहा। खुद की सुरक्षा की माँग करने लगा। उसके इस व्यवहार से सीआईडी के काम में अड़चनें बढ़ने लगीं। इसके बाद मुठभेड़ फर्जी थी या असली, इसका पता किसी को भी नहीं चला है।

मुठभेड़ प्रसिध्द होने का एक रास्ता

आजकल की पुलिस खुद को एन्कांउटर स्पेशलिस्ट कहलवाने के लिए ज्यादा से ज्यादा मुठभेड़ करना चाहती है। शायद पुलिस इसे प्रसिध्द होने का रास्ता मानती है। लेकिन मुठभेड़ के कई मामले फर्जी होते हैं। कुछ पुलिस अधिकारी मुठभेड़ को 'स्टंट' मानते हैं।

वर्तमान स्थिति में पुलिस अधिकारियों द्वारा किए जाने वाले बहुत से मुठभेड़ मामले फर्जी होते हैं। फिर कुछ देर तक उन पुलिस अधिकारियों पर कानूनी कार्रवाई चलती और फिर उन्हें छोड़ दिया जाता है।

कुछ सालों पहले मुठभेड़ करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश की जरूरत होती थी। यदि किसी पुलिस अधिकारी को अपराधी को पकड़ते वक्त मुठभेड़ करनी पड़े तो उसके आदेश वरिष्ठ अधिकारी देते थे। लेकिन आज की परिस्थिति काफी हद तक बदल गई है। पुलिस अपने आप को प्रगति के शिखर तक पहुँचाने के लिए मुठभेड़ का इस्तेमाल करती नजर आ रही है।

हम न्यूज चैनलों पर भी देखते हैं कि पुलिस अपराध का खातमा करने के नाम पर खुद अपराध कर रही है। कभी–कभी पुलिस किसी अपराधी से कुछ बात जबर्दस्ती उगलवाने के लिए उसका मानसिक और शारीरिक छल करती है। कई बार उस अपराधी की कोठड़ी में ही मौत हो जाती है। अंत में पुलिस उसे आत्महत्या अथवा मृत्यु करार देती है।

मुठभेड़ करने के बाद खुद को विजयी घोषित करने में पुलिस कभी नहीं चूकती। पर फर्जी मुठभेड़ में विजय प्राप्त करने वाले पुलिस मरने वाले व्यक्ति के परिवार के बारे में कभी नहीं सोचते। पुलिस अपनी प्रसिद्धि के पीछे कई नादान लोंगो को मार डालती है।

उनको मुठभेड़ का अधिकार देना चाहिए लेकिन सिर्फ उन मामलों में जहाँ अपराधी को पकड़ना मुश्किल हो। अब सवाल उठता है कि स्थिति मुश्किल है या नहीं यह कौन तय करेगा। इसका फैसला वरिष्ठ अधिकारियों को करना होगा। वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश के बगैर पुलिस को मुठभेड़ का अधिकार नहीं है।

मानवाधिकार आयोग

फ़र्जी मुठभेड़ में मारे गए निर्दोष लोगों के परिवार वाले या फिर आम जनता पुलिस के विरोध में मानवाधिकार आयोग में अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं। मानवाधिकार आयोग के कार्यकर्ता इस दिशा में कार्यरत हैं। यदि किसी नागरिक को उसके अधिकारों का पालन करने से रोका जाए तो उस रोकने वाले व्यक्ति के खिलाफ आयोग में मामला दर्ज किया जा सकता है। भारतीय संविधान में सभी को जीने का अधिकार दिया गया है।। ऐसे में पुलिस अपने सुरक्षा के नाम पर निर्दोष लोगों को मारे तो उन पर भी आयोग कड़ी कार्रवाई करने के आदेश न्यायालय की मदद से दे सकता है।

फ़र्जी मुठभेड़ के कुछ मामले:

1. कश्मीरी अभियंता पुलिस मुठभेड़ में मारा गया जो आंतकवादी नहीं था।

मुंबई में मोहम्मद इकबाल वाणी (30) को मारा गया। जब कश्मीर में रहने वाले उसके परिवार को इस बात का पता चला तो उनका कहना था कि मोहम्मद आंतकवादी नहीं एक कम्प्यूटर अभियंता था। काम के सिलसिले में वो कुछ दिनों के लिए मुंबई आया हुआ था। पुलिस ने उसे आंतकवादी समझकर मार डाला। अब पुलिस उसे फर्जी मुठभेड़ नहीं बल्कि मुठभेड़ करार दे रही है।

2. मेरा बेटा गेंगस्टर राजन का दोस्त नहीं था। यह लफ्ज है उस वृध्द पिता के जिसके दोनों बेटे पुलिस की गोली का बलि चढ़ गए। प्रकाश और उसके दोस्त को पुलिस ने अंधेरी में ढ़ेर किया। पुलिस को संदेह था कि प्रकाश राजन गेंग से मिला हुआ है। उसके परिवारवालों का मानना है कि प्रकाश का राजन गेंग से कुछ लेना–देना नहीं था। फिर भी पुलिस ने निर्दोष को मार दिया है।

ठाणे के घोड़बंदर रोड़ पर काफी नाटकीय तरीके से तीन युवकों को मार दिया गया था। 14 नवंम्बर 2003, को घोड़बंदर रोड़ पर असिस्टेंट पुलिस इन्स्पेक्टर रवींद्र आंग्रे ने तीन युवकों को मार दिया। राहुल राणे (28) किरण लोहार (24) और राजीव आंग्रे को पुलिस ने गेंगस्टर करार कर ढ़ेर किया। जबकि उनके परिवार वालों का कहना है कि वह एक फर्जी मुठभेड़ थी। असिस्टेंट पुलिस इन्स्पेक्टर का कहना था कि वह उनकी 50 वीं मुठभेड़ थी। युवकों के परिवार वालों ने इसे " कॉन्ट्रैक्ट किलिंग" कहा है। जब इन फ़र्जी मुठभेड़ मामलों को पुलिस ने मुठभेड़ करार दिया और पुलिस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई उस वक्त मारे गए लोगों के परिवार वालों के दर्द को नजरंदाज किया गया।

'फ़र्जी मुठभेड़' एक ऐसी समस्या है जिसे नियंत्रित नहीं बल्कि खत्म करने की जरूरत है। पुलिस अधिकारियों से बातचीत के बाद एक बात स्पष्ट हो गई कि वे अपनी इस गलती को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। इसका मतलब यह कतई नहीं है कि सभी पुलिस अधिकारी भ्रष्ट हैं। फर्जी मुठभेड़ पर अभ्यास करने के दौरान एक और महत्त्वपूर्ण बात सामने आयी कि पुलिस विभाग में 'भ्रष्टाचार' ने अपना अलग स्थान बनाकर रखा है। फ़र्जी मुठभेड़ के मामलों में फँसे पुलिस अधिकारी राजनीति या गेंगस्टर के दबाव में आकर काम करते हैं। पुलिस अधिकारियों को राजनीति से जुड़े लोग तथा गेंगस्टर पैसे दे कर अपना काम करा लेते हैं। काम हो जाने के बाद कई बार उन अधिकारियों की पोल खुल जाती है। पर राजनेता तथा गेंगस्टर खुद को बचाने में हमेशा कामयाब रहते हैं। पैसा लेकर काम करने वाले पुलिस के लोग अन्य पुलिस अधिकारियों की भूमिका को खराब करने का प्रमुख कारण बन जाते हैं। मानवाधिकार आयोग भी इस समस्या का निराकरण करने की बात करता है पर कुछ ठोस कदम उठाने में कोई सफल नहीं हुआ है। आम जनता इस मामले में आगे आना भी चाहे तो उन्हें कोई माध्यम नजर नहीं आता। क्योंकि वे खुद उनकी सुरक्षा के लिए पुलिस पर निर्भर रहते हैं।

साक्षात्कार

अ) फ़र्जी मुठभेड़ मामले में पुलिस की क्या राय है? यह जानना बहुत महत्त्वपूर्ण है। तब मैंने असिस्टेंट पुलिस इन्स्पेक्टर पी.एस.वाव्हल से चर्चा की। वे मीरा रोड़ विभाग के प्रमुख हैं। उनसे बातचीत के प्रमुख अंश:

1. मुठभेड़ क्या है ?

यह एक ऐसी स्थिति होती है जब अपराधी गिरफ्तार होने के बजाय पुलिस पर ही हमला करेतो पुलिस अपनी सुरक्षा के लिए अपराधी पर गोली चला सकती है। पर हमारा उद्देश्य उसे मारने का नहीं होता।

2. मुठभेड़ के लिए पुलिस का अलग स्क्वॉड होता है ?

हाँ, हर विभाग को अलग–अलग अधिकार दिए गए हैं। अपराध विभाग के असिस्टेंट पुलिस इन्स्पेक्टर को यह अधिकार दिया जाता है।

3. मुठभेड़ का अधिकार पुलिस को क्यों दिया गया है ?

देखिए, हर इंसान को अपनी जान प्यारी होती है। वैसे ही पुलिस भी इंसान ही होते हैं। जब हम ड्यूटी पर होते हैं तब हम पर करोड़ो लोगों की जान बचाने की जिम्मेवारी होती है। मैंने आपको बताया कि जब पुलिस को अपराधी से अपनी जान को खतरा नजर आता है, तब वह अपने इस अधिकार का उपयोग करते हैं। हम एक अपराधी को मारते हैं। तो हम हजारों लोगों की जान भी तो बचाते हैं। यदि हम भावना के अधीन हो कर अपराधी को ऐसे ही छोड़ देंगे तो वह खुलेआम चार–पाँच और लोगों को मार देगा। हम नहीं चाहते कि वह और निर्दोष लोगों की जान ले। जब अपराधी गिरफ्तार होने से इनकार कर हम पर गोली चलाता है तो हम भी गोली चलाते हैं। पर हमारा पहला निशाना उसका पैर होता है। ताकि उसके पैर पर चोट लग कर वह हमारे गिरफ्त में आए।

4. फर्जी मुठभेड़ का अर्थ बताइए ?

फर्जी मुठभेड़ यह एक प्रसारमाध्यमों ने बनाया हुआ शब्द है। मुठभेड़ का अधिकार पुलिस को दिया गया है। फर्जी मुठभेड़ का नहीं। कई बार पुलिस उन अपराधियों को मारती है जिनका राजनीति अथवा अंडरवर्ल्ड से संबंध होता है। ऐसी मुठभेड़ को वे लोग फर्जी मुठभेड़ कहते हैं।

5. क्या पुलिस मुठभेड़ के अधिकार का गलत इस्तेमाल नहीं करती ?

मैंने व्यक्तिगत रुप से ऐसा कभी नहीं किया और अपने साथियों को भी ऐसा करते नहीं देखा। हम जब भी किसी अपराधी को मारते हैं तो उसका पूर्व इतिहास पहले जाँचा जाता है। जैसे उसने पहले कितने और किस प्रकार के अपराध किए हैं। क्योंकि हमारे खुफिया लोग हर दिशा में फैले रहते हैं। वे हमें पहले ही उस आदमी की बैक स्टोरी बताते हैं। कई बार हमें गेंगस्टर से धमकी के फोन भी आते हैं। पर जब पानी सिर से ऊपर चढ़ जाता है तो हमें उन्हें मारना ही पड़ता है।

6. यदि कोई फर्जी मुठभेड़ करे तो उस पर क्या कार्रवाई होती है?

उन पुलिस अधिकारियों पर कड़ी कार्रवाई होती है। वह मामला सी.आई.डी को सौंपा जाता है।

7. हमने सुना है कि पुलिस भीड़ में मुठभेड़ नहीं करती?

ऐसा कुछ नहीं है। कई बार पुलिस पर आरोप लगाया जाता है कि वे भीड़ से अलग मुठभेड़ करते हैं। हम उस अपराधी पर पहले से नजर रखते हैं और भीड़ से अलग ले जा कर उन्हें पकड़ने की कोशिश करते हैं। ताकि आम जनता की जान को खतरा न हो।

8. क्या आपने कभी मुठभेड़ की है ?

हाँ। मैंने दादर में एक अपराधी को मार गिराया था। इस बातचीत के बाद उन्होंने मुझे उनके कुछ अनुभवों से परिचित कराया। उनका कहना है, मैंने एक बार अपने बड़े पुलिस अधिकारी से पूछा था क्या मुठभेड़ करना पाप है ? तो उनका जवाब कुछ इस प्रकार था।

देखो, अपराधी तो अपराधी होता है। वह भावनाहीन होता है। उसे दुनिया की कुछ फिक्र नहीं होती। ऐसे आदमी को मारना पाप नहीं होता।

पी.एस.वाव्हल कहते हैं कि 90 प्रतिशत जनता पुलिस के साथ है। मुंबई काफी हद तक सुरक्षित है। पंजाब के आंतकवादियों

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

अकबर महान नहीं, क्रूरतम अत्याचारी था

● कृष्ण चन्द्र गर्ग

तैमूरलंग और चंगेजखाँ – दो क्रूरतम अत्याचारी हुए हैं। अकबर की रगों में इन्हीं का खून था – पिता की तरफ से तैमूरलंग का और माता की तरफ से चंगेजखाँ का।

अकबर का शरीर – (विंसैंट स्मिथ के अनुसार)– ऊंचाई लगभग 5 फुट 7 इंच, चौड़ी छाती, पतली कमर और लम्बे बाजू। उसके पैर अन्दर की और झुके हुए थे। चलते समय वह अपने बाएँ पैर को कुछ घसीटता हुआ चलता था, मानो लँगड़ा हो। उसका सिर दाएँ कंधे की ओर कुछ झुका हुआ था। मटर के आधे दाने के आकार का एक मस्सा उसके ऊपरी होंठ को नथने से जोड़ता था। उसका रंग श्यामल था।

पादरी एंथनी मांसरेत अकबर के दरबार में गए थे। वे लिखते हैं – अकबर के कन्धे चौड़े तथा पैर कुछ घुमावदार हैं। रंग कुछ हल्का भूरा है। वह अपना सिर अधिकतर दाहिने कंधे की ओर झुकाए रखता है। माथा चौड़ा है, आँखें चमकती हैं। उसकी पलकों के बाल बहुत लम्बे हैं, नाक छोटी और सीधी है, नथने काफी फूले हैं जैसे उपहास की मुद्रा में हों। बाएँ नथने तथा होंठ के बीच एक काला तिल है, दाढ़ी सफाचट है, परन्तु मूँछ रखता है। उसके बाल लम्बे हैं। टोपी वह नहीं लगाता, अपनी पगड़ी में ही सारे बाल घुसेड़ लेता है। बाएँ पैर से कुछ लँगड़ाता है।

अकबर पूरी तरह अनपढ़ था तथा शराब पीने का व्यसनी था। वह अत्यंत कामी था। उसके हरम में बहुत सी स्त्रियाँ थीं। हारे हुए राजाओं के घरों से मनपसंद महिलाओं को अकबर अपने हरम में भरती कर लेता था।

आगरा के लाल किले में भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग का नीला बोर्ड लगाा हुआ है। उस पर लिखा है कि यहाँ अकबर पाँच हजार औरतें रखता था (आचार्य नरेश)

अकबर की आँख उसके संरक्षक बैरम खाँ की पत्नी पर लग गई थी। उसने बैरम खां की नृशंस हत्या करवाने के बाद उसकी पत्नी से शादी कर ली थी।

मीना बाजार नाम की एक प्रथा थी जिसके अनुसार नए साल के दिन सब घरों की महिलाओं को अकबर के सामने से गुजरना होता था ताकि वह अपनी रूचि के अनुसार उनमें से किसी को चुन सके।

पानीपत के युद्ध के पश्चात 6 नवम्बर 1556 के दिन जब अकबर के सामने घायल तथा अर्धचेतन अवस्था में हेमू (हेमचन्द्र) को लाया गया तब अकबर ने टेढ़ी तलवार से उसकी गरदन पर प्रहार किया। अकबर उस समय 14 वर्ष का था। (विंसैंट स्मिथ)

चित्तौड़गढ़ के किले को जीतने के बाद अकबर ने वहाँ मौजूद सेना तथा अन्य लोगों का कलेआम करवाया। विंसैट स्मिथ के अनुसार इस कत्लेआम में 30,00 लोग मारे गए थे। कर्नल टाड का कहना है कि चित्तौड़ को जीतने के बाद अकबर ने बचे हुए सभी स्मारकों को तोड़ दिया था।

अकबर नामा – अबुज फजल – जिहादी अकबर – फतहनामा चित्तौड़ 1568 में लिखा है कि उस युद्ध को देखने हेतु बिना हथियार आसपास खड़े 40,000 हिन्दु किसानों को मौत के घाट उतार दिया गया। (आचार्य नरेश)

सन 1572 के नवम्बर मास में जब अकबर अहमदाबाद के शासक मुजफ्फरशाह को हराकर बन्दी बना चुका था, तब उसने आज्ञा दी थी कि विरोधियों को हाथियों के पैरों तले रौंदकर मार डाला जाए।

मसूद हुसैद मिर्जा अकबर का निकट सम्बंधी था। उसने अकबर के विरूद्ध बगावत की और वह पकड़ा गया। उसकी आँखों को सुई से सी दिया गया और उसके 300 साथियों को तड़पा–तड़पा कर मारा गया।

थानेसर के पवित्र कुण्ड पर इक्कठे हुए साधु 'करु' और 'पुरी' दो भागों में बँटे थे। अकबर अपने सेवकों के साथ वहाँ उपस्थित था। पुरी वालों ने बादशाह से शिकायत की कि कुरु वालों ने उनका बैठने का स्थान अवैध रूप से छीन लिया है। इसलिए वे जनता के दान से वंचित रह गए हैं। अकबर की ओर से उन्हें कहा गया कि वे आपस में युद्ध करके निर्णय करलें दोनों ओर के लोगों को शस्त्र देकर लड़ाया गया। जो पलड़ा हल्का पड़ता बादशाह अपने लोगों को उनकी सहायता करने को कहता। अंत में दोनों वर्गों के लोग अकबर के सैनिकों द्वारा पूरी तरह समाप्त कर दिए गए। (विंसैट स्मिथ)

हल्दी घाटी के युद्ध में राणा प्रताप और अकबर – दोनों की सेनाओं में राजपूत बहुतायत में थे। जब दोनों ओर से घमासान युद्ध हो रहा था तब अकबर की ओर से लड़ रहे बदायूँनी ने अपने सेनानायक से पूछा कि वह कहाँ गोली चलाए क्योंकि यह पहचानना कठिन है कि कौन सा राजपूत हमारी ओर है और कौनसा राणा प्रताप की ओर है। बदायूँनी का कहना है कि उसे उत्तर मिला कि इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता। जो भी राजपूत मरेगा इससे इस्लाम का ही लाभ होगा।

सन 1603 की घटना है। अकबर दोपहर के विश्राम के बाद कुछ जल्दी उठ खड़ा हुआ। उसे कोई सेवक न दिखा, परन्तु एक मशालची सोया मिला। अकबर ने क्रोध में आकर उस मशालची को मीनार से नीचे जमीन पर पटकने का आदेश दिया।

अकबर अपने आप को पैगम्बर की भाँति पेश करता था। वह हिन्दुओं को अपने पैरों की धोबन पिलाता था। हिन्दुओं को छोड़ और लोग आते तो वह उन्हें पीने नहीं देता था, बल्कि झिड़क देता था। (स्मिथ और बदायूँनी)

जिजिया – अकबर ने आम हिन्दुओं पर जिजिया कर लगा रखा था। जिजिया वह कर था जो मुस्लिम राज में गैर–मुस्लिमों को जीने का अधिकार लेने के लिए देना पड़ता था। रणथम्भोर की सन्धि में बूँदी के शासक को जिजिया कर से विशेष छूट दी गई थी।

स्मिथ के अनुसार – अकबर अपने आप को सारी प्रजा का उत्तराधिकारी के रूप में समझता था तथा मृतक की सारी सम्पन्ति को ले लेता था। फिर बादशाह की कृपा से ही परिवार वाले फिर से काम धंधा शुरू कर पाते थे।

डाक्टर आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव अपनी पुस्तक 'अकबर महान' में लिखते हैं – शर्फुद्दीन अकबर के सेनापतियों में से एक था। उसने आमेर (प्राचीन जयपुर) के तत्कालीन नरेश राजा भारमल के विरूद्ध अनेक बार आक्रमण किया। बहुत कुछ छीन–झपट लेने के अतिरिक्त शर्फुद्दीन ने भारमल के तीन भतीजे भी पकड़कर बंधक बना लिए थे और उन्हें मार देने की धमकी दे रखी थी। इनके नाम थे– जगन्नाथ, राजसिंह और खंगर। भामल के सम्मुख सर्वनाश उपस्थित था। इसलिए अत्यन्त असहाय अवस्था में उसने अकबर द्वारा मध्यस्थता तथा उसके साथ समझौता चाहा। भामल के तीनों भतीजों की मुक्ति के लिए अकबर ने एक निदोष, असहाय राजकुमारी को उसके सम्मुख समर्पण की शर्त लगा दी थी साँभर नामक स्थान पर राजकुमारी अकबर को सौंप दी गई। तीनों राजकुमारों को छोड़ा गया। इसके साथ–साथ बड़ी धन राशि भी देनी पड़ी थी।

ऐसे ही दूसरे राजपूत राजाओं की कन्याओं को अकबर को सौंपा गया था। जैसलमेर के राजा हरराय डूँगरपुर के राजा आसकरण ने अपनी बेटियाँ अकबर के हरम में भेजी थीं। बीकानेर के राजा कल्याणमल को अपने भाई काहन की बेटी अकबर के हरम में भेजनी पड़ी क्योंकि उसकी अपनी बेटी विवाह योग्य नहीं थी। काँगड़ा उर्फ नगरकोट के शासक विधिचन्द ने अकबर के हरम के लिए डोला भेजने से मना कर दिया तो अकबर के सैनिकों ने ज्वालामुखी देवी के मन्दिर में 200 काली गाएँ काटकर उनके खून से मन्दिर के द्वारों व दीवारों को लथपथ कर दिया था। (राजेश आट्टा)

अकबर के नवरत्न – टोडरमल जनता से धन वसूलने की उस प्रणाली के निर्माण में लगा था जिसमें उनसे धन वसूलने के लिए उनको कोड़े लगाए जाते थे, अन्यथा उन्हें अपनी पत्नी और बच्चे बेचने पड़ते थे। अबुल फजल बड़ा चापलूस था जो शहजादा सलीम द्वारा मरवा डाला गया था। फैजी एक मामूली सा कवि था जो अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ था। बीरबल युद्ध में मारा गया था। उसके नाम से प्रसिद्ध बुद्धि–चातुर्य, हास्य–व्यंग्य एवं हाजिर–जवाब की कथाएँ वास्तव में किसी और का कला कौशल था। वित्तमंत्री शाह मंसूर का वध तो स्वयं अबुल फजल ने अकबर के आदेश पर ही किया था। राजा भगवान दास ने अपनी स्त्रियों, पुत्रों और भाई भतीजों समेत सबको अकबर की सेवा में लगा रखा था। फिर भी उसके साथ बादशाह का व्यवहार बहुत निन्दनीय था। इस बात से दुखी होकर उसने अपने पेट में अपना ही छुरा घोंप लिया था। शराब के नशे में मस्त अकबर ने एक बार मानसिंह का गला दबा दिया था। अकबर के दरबार के चित्रकार दसवन्त ने अपनी हत्या छुरा घोंपकर करली थी।

मुगल दरबारों में स्थिति इतनी असहय् थी कि अपने जीवन, सम्मान, महिलाओं, घर की पवित्रता तथा धार्मिक मान्यताओं के अपमान से दुखी हिन्दु लोग निराशा, पागलपन और मृत्यु को प्राप्त होते थे। अपना सब कुछ अकबर की सेवा में लगाने वाला टोडरमल भी स्थिति से परेशान होकर त्यागपत्र देकर बनारस चला गया था।

831 सैक्टर 10
पंचकूला, हरियाणा
0172–4010679

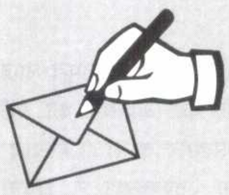

पत्र/कविता

नई सुबह का स्वागत

भारतीय लोक तंत्र का महापर्व 16 मई 2014 को समाप्त हो गया? अब सरकार ने गठन की औपचारिकतायें पूरी हो गयी हैं। सम्पूर्ण देशवासी नई सरकार के गठन से आने वाले परिवर्तनों की प्रतिक्षा कर रहे हैं। समस्त नव–निर्वाचित जन प्रतिनिधियों को हार्दिक बधाई।

यह सर्वविदित है कि विश्व के सबसे प्रमुख लोकतान्त्रिक देश की सरकार के गठन की प्रक्रिया मई माह में सम्पन्न हो गई है। यह माह सबसे ज्यादा तापमान वाला होता है। पुरानी कहावत है कि 'सोना' (धातु) आग में तप कर ही निखार लाला है। इसी प्रकार इस विशाल लोकतन्त्र के गठन में शामिल होने के लिये हज़ारो जन प्रतिनिधि इसी प्रकार भयंकर गर्मी में तप कर लोकतांत्रिक सरकार के गठन की प्रक्रिया पूरी करने में संलग्न रहेंगे। जो एक सौ बीस करोड़ देश–वासियों के विकास के नये मार्ग प्रशस्त करेंगे?

यह भी सर्वविदित है कि मई माह में प्रकृति में 'गुलमोहर' और 'अमलताश' के फूल सम्पूर्ण फिजा में अपनी मीठी–मीठी आभा बिखरते है जो तापमान के उच्च मापदण्ड के अनुरूप ज्यादा रही। इसी माह फलों का राजा आम अपनी खुशबू और मिठास बिखेर रहा था 'अल्फैंजो' आम का स्वाद और ज्यादा मिठास भर रहा था इस राजनैतिक माहौल में? पक्षियों की रानी कोयल भी इस अत्यन्त महत्वपूर्ण वातावरण में अपनी मिठास भरने को आतुर थी।

सम्पूर्ण देशवासियों को विश्वास है कि इस लोकतांत्रिक पर्व को और ज्यादा मजबूत बनाने के लिये सभी राजनैतिक दल चुनावी विधाओं और खटास को भूल जायेंगे और विश्व में नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे। शांति और सदभाव का? समस्त मतदाताओं को नव निर्वाचित सदस्यों को बधाई।

कृष्णमोहन गोयल
113,बाजार कोट, अमरोह – 244221

****

भारत के वीर शहीदों की गाथा

सुनों अब भजन सुनाऊँ मैं।
देश धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊँ मैं।।

स्वामी दयानन्द जी ने, जगत को जगाया सुनों।
वेदों का प्रकाश, सर्व विश्व को दिखाया सुनों।।
सत्य का प्रचार किया, धर्म को निभाया सुनों।।।

ऋषि को शीष झुकाऊँ मैं।
देश–धर्म के दीवानों की गाथा गाऊँ मैं।।
महारानी लक्ष्मीबाई ने, अंग्रेजों से की थी जंग।
रानी का रण कौशल देख, दुनिया हो गई थी दंग।।
देश की उस दीवानी ने, प्रतिज्ञा ना की थी भंग।।।

भूल ना उसको पाऊँ मैं।
देश–धर्म के दीवानों की गाथा गाऊँ मैं।।
वीर चन्द्रशेखर ने, अंग्रेजों के बीगाड़े होश।
जीवन भर आज़ाद रहा, जिसका था निराला जोश।।
आता है अब याद प्यारा, नेता वह बंगाली बोस।।।

वीर पर बलि–बलि जाऊँ मैं।
देश–धर्म के दीवानों की गाथा गाऊँ मैं।।
मदनलाल धींगड़ा ने, लंदन में कमाल किया।
अंग्रेजों का अफसर मारा, जग हैरत में डाल दिया।।
फाँसी के फंदे को चूमा, देश को निहाल किया।।।

गजब की बात बताऊँ मैं।
देश–धर्म के दीवानों की गाथा गाऊँ मैं।।
कान्हा रावत ने भी खौफ, मौत का ना खाया सुनों।
औरंगजेब दुष्ट की, वह, चाल में ना आया सुनों।।
चोटी ना कटवाई उसने, गर्दन को कटवाया सुनों।।।

पढ़ो इतिहास पढ़ाऊँ मैं।
देश–धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊँ मैं।।
वीरों के बलिदानों से यह, आज़ादी पाई है आज।
हे नेताओ! जाग जाओ, लाओ मंगलकारी राज।।
"नन्दलाल निर्भय'' को, शहीदों पर है भारी नाज।।।

राम की याद दिलाऊँ मैं।
देश–धर्म के दीवानों की गाथा गाऊँ मैं।।

पं. नन्दलाल निर्भय
आर्य सदन, बहीन
जनपद पलवल (हरियाणा)
फोन न. 9813845774

संन्यासी महात्माओं को आमंत्रित नहीं किया गया

''भारतीय जनता पार्टी को आर्यसमाज ने पूर्ण रूप से समर्थन किया था किन्तु 26 मई 2014 सोमवार सायं 6 बजे 15वाँ प्रधान मंत्री के रुप में श्री नरेन्द्रमोदी जी के शपथ ग्रहण के समारोह में पड़ौसी देशों के प्रधानाध्यक्ष तथा और देशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

सिनेमा जगत् के नायक नायिका भी आये थे और भारत के जाने माने साधुसन्तों को भी बुलाया गया था। त्रिपुण्ड धारी तिलक लगाये शंकराचार्य भी उपस्थित थे।

किन्तु 'आर्य समाज' का वहां न कोई नाम लिया न उसके किसी वरिष्ट नेता को बुलाया गया था।उस समय हमें ऐसा लगा कि आर्य समाज का अब कोई महत्व नहीं रह गया है। क्योंकि साधुसन्तों के आगे ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के किसी संन्यासी महात्माओं को आमंत्रित नहीं किया गया था।

श्री हरिचन्द्र वर्मा वैदिक
मु.वो. मुराई
जिला–वीरभूम (पं. बंगाल) 731219
मो. 8158011

****

हिन्दू धर्म का प्रचार कैसे होगा

ईसाई धर्म की विभिन्न शाखाएँ हैं कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट, व प्यूरिटन इत्यादि। विश्व के अधिकांश देशों में ईसाई राज्य हैं। ये शाखायें एशिया और अफ्रीका में स्थान–स्थान पर चर्च, अनाथालय, अस्पताल और शिक्षण संस्थायें मिलती हैं। यूरोप के सभी राज्य इन संस्थाओं को मुक्त हस्त से दान देते हैं। ये संस्थायें जनसेवा करती ही हैं पर इसके साथ साथ ईसाई धर्म का प्रचार भी करती हैं। हिन्दू धर्म की भी अधिक शाखाऐं हैं। आर्य समाज के अलावा कोई भी शाखा हिन्दू धर्म का प्रचार नहीं करती। इस कारण हिन्दुओं की संख्या दिन–प्रतिदिन धरती जा रही है। जब तक सभी शाखायें धर्म–प्रचार में नहीं जुड़ेंगी तब तक हिन्दू धर्म का विस्तार केसे होगा?

****

thearyasamaj.org

प्रभु का दर्शन कैसे करें

● डॉ. अशोक आर्य

संसार का प्रत्येक प्राणी अपना जीवन सुखी बनाने के लिये प्रभु को पाना चाहता है। वह जानता है कि सुख उसी को ही मिलता है, जो प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त कर ले, प्रभु का साक्षात्कार कर ले। प्रभु को पाने का सही साधन यह है कि ज्ञानी लोग चिन्तन करके स्वयं को प्रकृति की उलझनों से ऊपर उठाकर, उस परमपिता परमात्मा का न केवल स्वयं दर्शन मात्र कर पाने में ही सफलता पाते हैं अपितु दूसरों को भी प्रभु के दर्शन करवाते हैं, दूसरों के जीवन भी सुखी बनाते हैं। इस तथ्य को सामवेद के मन्त्र संख्या 31 में इस प्रकार स्पष्ट किया गया है:–

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।

द्राशे विश्वाय सूर्यम ।।सामवेद 31।।

मानव, जीवन में अनेक कर्म करता है। इनमें कुछ कर्म उत्तम होंगे तो अधिकांश निम्न होंगे। यह पतित कर्म ही होते हैं, जिनके कारण मानव को जीवन में इन अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। यह कष्ट ही उसे मानव ईश्वर की शरण में ले जाते हैं। कहा भी है कि :–

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय।।

जीव प्रभु के पास स्वयं को अर्पण करना चाहता है किन्तु कैसे उसे करे अर्पण, अर्पण तो उसी को ही किया जा सकता है, जो दिखायी दे, जो दिखायी ही न दे, उसे कैसे अर्पण करें? जब प्रभु दिखेगा, तब ही तो उसे अपने कष्ट अर्पण करेगा। अतः प्रभु के दर्शन, उसे कुछ भी अर्पित करने के लिए आवश्यक हैं।

मानव तूं उपर उठ :–

प्राकृतिक भोगों में उलझी अवस्था में जीव प्रभु के दर्शन कभी नहीं कर सकता। हम जानते हैं कि जीव सुख चाहता है किन्तु उसने प्राकृतिक भेगों को ही सुख का साधन समझ रखा है, इस कारण वह सदा इन भोगों में ही सदा उलझा रहता है, इसी कारण प्रभु दर्शन से निरन्तर दूर होता चला जा रहा है। जब तक हमें दुनियां के रंगों में हमारी आंखें उलझ रही हैं तब तक हमें प्रभु दर्शन का प्रभु कथा का, कोई भी प्रसंग हमारे कानों में नहीं पड़ सकता। हम भोगों में लिप्त हैं। हमारे पास प्रभु स्मरण के समय ही नहीं तो फिर प्रभु दर्शन की अभिलाषा ही क्यों रखते हैं? सासांरिक रंगों में उलझने से तो हम सांसारिक वस्तुएं ही पा सकते हैं। यदि प्रभु के दर्शन करने हैं तो उपाय भी तो प्रभु स्तुति के ही करने होंगे। अन्यथा उसके दर्शन कैसे मिलेंगे। इसलिए हम अपने जीवन में एक बार यह निर्णय कर लें कि प्रभु के दर्शन राग–द्वेश से होंगे या फिर किसी अन्य उपाय से। एक बार पूर्ण ध्यान पूर्वक विचार कर कुछ निर्णय लेने के पश्चात् फिर बेकार के राग–द्वेष से परिपूर्ण विषयों पर समय नष्ट करना अथवा अपनी शक्ति लगाने का कुछ भी प्रयोजन नहीं रह जाता। जिस दिन हम इस भ्रान्ति से ऊपर उठ जावेंगे, जिस दिन हम गलितयां छोड़कर ऊपर उठ जावेंगे, जिस दिन प्रभु दर्शन के लिये हम गम्भीर विचार कर लेंगे तथा जिस दिन हम प्रकृति की उलझनों से निकल जाएंगे, उस दिन से ही हम उस दूर दिखाई देने वाले, सब स्थानों पर विद्यमान, प्रत्येक वस्तु के प्रत्येक कण में विद्यमान, ज्ञान की अग्नि से प्रकाशित तथा सबको प्रकाशित करने वाले को ज्ञानी लोग विचारशील होकर धारण करते हैं।

परमपिता परमात्मा संसार के कण–कण में होने के कारण हमारे हृदयों में भी निवास करता है। परन्तु ज्ञान के अभाव में उसकी सत्ता को हम समझ नहीं पाते, उसके दर्शन नहीं कर पाते। हां जब हम अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगा लेते हैं, ज्ञान शील बन जाते हैं तथा ज्ञान को प्राप्त कर लेते हैं तो हम उस प्रभु को अपने अन्दर धारण करते हैं, स्थापित करते हैं।

प्रभु ज्ञान को अन्यों में भी बांटते हैं:–

ज्ञानी विद्वान लोग अपनी ज्ञान की ज्योति के माध्यम से प्रभु के दर्शन कर लेते हैं, उसे पा लेते हैं तो वह इतने नहीं नहिं होते कि इस रस के पान को वह अकेले ही लें अपितु अन्यों में भी उसे बांटने के सुप्रयास आरंभ कर देते हैं। संसार के जीव इस प्रकार भटक रहे होते हैं जिस प्रकार जंगल में हिंसक पशु। इन्हें सुपथ पर लाने के लिये, इन्हें भी प्रभु के दर्शन कराने के यत्न ज्ञानी लोग करते हैं। इस प्रकार परमानन्द की प्राप्ति के पश्चात् भी वह स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर अन्यों के मार्गदर्शन भी करते हैं। इससे यह प्रमाणित होता है कि यह सब लोग स्वार्थी भावना से बहुत दूर होते हैं। इस कारण ही यह लोग मूर्खता से अथवा मूर्खतापूर्ण कार्यो से भी दूर होते हैं।

104, शिप्रा अपार्टमेन्ट,
कौशाम्बी–201010 गाजियाबाद

☞ *पृष्ठ 08 का शेष*

आंतकवादियों व दुर्दान्त...

ने मुंबई पर हमला करने की कोशिश की थी पर मुंबई पुलिस ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया।

उनसे बात करने के बाद एक बात तो स्पष्ट हो गई कि पुलिस फ़र्ज़ी मुठभेड़ के मामले जनता से छिपा कर रखती है। मैंने कई बार उनसे फ़र्ज़ी मुठभेड़ के उदाहरण माँगे पर उन्होंने हर बार मेरा सवाल टाल दिया। पुलिस को उनकी भूमिका साफ सुथरी रखनी है तो उन्हें फ़र्ज़ी मुठभेड़ को रोकना ही होगा।

'फ़र्ज़ी मुठभेड़' के संबंध में जानकारी पुलिस से मिल पाना काफी मुश्किल था। फिर मैंने वकील मिहिर देसाई से इस बारे में चर्चा की। वकील मिहिर देसाई जो मुंबई में मानवाधिकार के बड़े कार्यकर्ता हैं। उनसे मुलाकात के प्रमुख अंशः

मुंबई में जो मुठभेड़ के मामले होते हैं उनमें से कुछ फ़र्ज़ी होते हैं। हर कोई जानता है कि मुठभेड़ में जो मुठभेड़ के मामले होते हैं उनमें से कुछ फ़र्ज़ी होते हैं। आप क्या कहना चाहेंगे?

पिछले 10 से 15 सालों से ऐसी घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। हर कोई जानता है कि मुठभेड़ और वोर भी मायानगरी में कुछ बात जरूर है। मैंने देखा है कि कई मुठभेड़ में पुलिसकर्मी मारे जाने के प्रसंग कम होते हैं और अपराधी बच पाना संभव ही नहीं होता। यदि आप मुठभेड़ करते हैं तो कुछ जख्म के निशान आपके शरीर पर भी तो होने चाहिए। पर नहीं होते। जो अपराधी होता है उसके कमर के नीचे नहीं बल्कि कमर के ऊपर की निशान पाए जाते हैं। ऐसे वक्त लोग भी आगे नहीं आते क्योंकि वे समझते है कि गेंगस्टर को तो मरना नहीं है।

मुठभेड़ फ़र्ज़ी थी या नहीं इसे कैसे जान सकते हैं?

विवाद इस पर नहीं होना चाहिए कि मुठभेड़ फ़र्ज़ी थी या नहीं बल्कि विवाद न्यायव्यवस्था के कामकाज पर होना चाहिए। न्यायव्यवस्था में कई बार मुठभेड़ मामलों को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया जाता और फिर पुलिस इसे एक अतिरिक्त अधिकार के रूप में इस्तेमाल करती है। मुंबई में होने वाली बहुत सी मुठभेड़ घटनाएँ 'सुपारी होती हैं। पुलिस गेंगस्टर से बदला लेने के लिए ऐसा करती है।

कहा जाता है कि मानवधिकार कार्यर्ता जब पुलिस के खिलाफ जाते हैं तो वे अपराधियों का साथ देते हैं?

मैं एक बात स्पष्ट कर दूँ कि हम लोग हिंसा के खिलाफ हैं। पुलिस और सुरक्षाकर्मियों का काम होता है कि न्याय का सही इस्तेमाल करें। वे ही जनता को न्याय दिलाने का काम करते हैं। जब वे खुद न्याय को तोड़ते हैं तब मानवाधिकार कार्यकर्ता अपने अधिकारों का इस्तेमाल कर पुलिस का विरोध करते हैं।

मुठभेड़ की घटनाओं पर कड़ी नजर कैसे रखें?

मुठभेड़ का हर एक मामला उसकी तह तक जाकर जाँचना चाहिए। जब कोई मुठभेड़ होती है तो उस मामले में 'संदिग्ध' पुलिस अधिकारियों की पूछताछ होना जरूरी है। पुलिस कभी मामले में उलझना नहीं चाहती। मानवाधिकार आयोग ने पुलिस हिरासत में मरने वाले कैदियों के बचाव के लिए वीडियो रिकॉर्ड लगवाए हैं। वैसे ही मुठभेड़ के मामले में भी कुछ ठोस कार्रवाई होनी चाहिए।

पुलिस का कहना है कि जब वे गेंगस्टर को मारते हैं तब ऐसी मुठभेड़ में सबूत मिलना मुश्किल होता है?

पुलिस की एक सामान्य कल्पना है: हर कोई भ्रष्ट है, हम भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकना चाहते हैं, इसलिए हम 'अपराधियों' को मारते हैं। लेकिन देश को ऐसे चलाया नहीं जा सकता। जाँच करते वक्त वैज्ञानिक पध्दतियों का इस्तेमाल करना चाहिए। यदि आप सबूतों को रखना ही नहीं चाहते तो सबूत मिलेंगे कैसे?

हिंसक न्याय इसका खातमा करेंगे ?

नहीं। 'टाडा' जैसे न्याय पुलिस को ज्यादा हिंसक बनाते हैं। इससे आम आदमी की सुरक्षा खतरे में आती है।

सांप्रदायिक हिंसा के नाम पर पुलिस कई बार आम आदमी के अधिकारों को रोकती है, इस देश में न्याय और सुरक्षा के नाम पर पुलिस कुछ भी कर सकती है। जब आदमी के अधिकारों को बाधित किया जाता है तब पुलिस अपना नया रुप दिखाने लगती है। उस वक्त मानवाधिकार आयोग अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। यह न्यायव्यवस्था का काम है कि वह पुलिस के अधिकारों पर ज्यादा ध्यान दे।

वकील मिहिर देसाई ने भी मुझे महत्त्वपूर्ण जानकारी तो दी पर वे मुझे ठीक से एक बात बता नहीं पाए कि कितने फ़र्ज़ी मुठभेड़ मामले उनके पास दर्ज हुए हैं और उनमें से कितने मामलों का अंतिम निर्णय आ चुका है। इसका मतलब यह निकलता है कि न तो पुलिस फर्जी मुठभेड़ के मामले रुकवा सकती है और न ही मानवाधिकार आयोग। इस समस्या का खातमा न्यायव्यवस्था ही कर सकती है। न्यायव्यवस्था के अन्तर्गत ऐसे कानून बनवाने चाहिए जो इस समस्या को जड़ से उखाड़ फेंके।

ए–1002/पंचशील हाईट्स
महावीर नगर कांदिवाली (प)
मुम्बई–67

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 09-10/7/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

D.A.V. PUBLIC SCHOOL

SECTOR-14, FARIDABAD-121007

A Sr. Secondary School, Aff. to CBSE, New Delhi (AFF. NO.: 530049)

Ph.:0129-2283335 to 3338, E-mail : admn_dav14fbd@yahoo.co.in Website : www.dav14faridabad.org

ISO 9001:2008 DNV

D.A.V. COLLEGE MANAGING COMMITTEE ओ३म् ESTD. 1886

We are proud of our Shining Stars

RESULT HIGHLIGHTS CLASS XII

- Total Number of Students appeared : 359
- Distinctions in all Subjects : 81
- Total Number of Distinctions : 1098
- Number of Students securing 90% & above : 53
- Number of Students securing 80% & above : 148
- Number of Students securing 70% & above : 255

PRIDE OF SCHOOL

- ALL INDIA DAV TOPPER
- DISTRICT TOPPER

ARPAN KUKREJA
98.4% - COMMERCE

PRIDE OF SCHOOL

DISTRICT TOPPER

MANUSHI TOOR
96.1% - HUMANITIES

STREAMWISE TOPPERS

NON-MEDICAL			MEDICAL			COMMERCE				HUMANITIES		
Varsha Rani 97.2%	Lakshay Mongia 96.4%	Sakshi Singh 96.4%	Tammana Veer 95.6%	Kashika Manchanda 92.4%	Srijani Ghosh 87.8%	Arpan Kukreja 98.4%	Nishita Dixit 95.8%	Manisha Shah 95.6%	Rishabh Chhabra 95.6%	Manushi Toor 96.1%	Sunaina Dhanda 95.0%	Shivangi Singh 93.8%

STUDENTS SCORING 90% AND ABOVE IN AGGREGATE

Arpan Ku reja, Varsha Rani, Lakshya Mongia, Sakshi Singh, Sakshi Singh, Nishita Dixit, Tamanna Veer, Manisha Shah, Rishabh Chhabra, Deepali Gupta, Riya Gupta, Manushi Toor, Upasana Kalra, Sunaina Dhanda

Shailaja Varshney, Priyanka Singh, Khyati Malhotra, Kshitij Yadav, Shivangi Singh, Jasleen Kahloon, Srishti Bhardwaj, Sanchita Aggarwal, Aayush Suneja, Aayushi Gupta, Deepanshi Banga, Riya Lakhotia, Shivani Kanth, Apporva Trivedi

Rashmi Banerjee, Deep Shikha Gupta, Shubhank Prabir, Sunny Verma, Kanishka Manchanda, Anamika, Tanya Srivastava, Rishabh Kaasat, Prateek Chaddha, Umang Goyal, Yogesh Virmani, Saransh Pal, Akshun Gupta, Nikita Gulati

Sneha Singh, Ashna Monga, Hardik, Poras Parashar, Ujjawal Varshney, Megha Sharma, Priyanka Bhandari, Shrishti Bhardwaj, Shivani Gupta, Ruchit Thapliyal, Vivek Kr. Meena

RESULT HIGHLIGHTS CLASS X

- Total Number of Students : 318
- Total Number of A1's : 208
- Total Number of A2's : 337
- Number of Students scoring CGPA 10 (A1 in All Subjects) : 13
- Number of Students scoring CGPA 9.2 to 9.8 : 50
- Number of Students scoring CGPA 8.2 to 9.0 : 61

SUBJECT WISE A1 & A2

	A1	A2
ENGLISH	29	66
MATHS	42	59
SCIENCE	25	63
SST	41	57
HINDI	61/280	82/280
SANSKRIT	10/38	10/38

SHINING STARS WITH CGPA 10

Jyoti Goyal, Ketki Saini, Nidhi Aggarwal, Varsha Bhardwaj, Chakshu Gaba, Avi Singh, Gautam Saraswat, Bhawna Dawar, Devansh Jindal, Surabhi Sinha, Yash Gaba, Simran Ahuja, Manas Singirkar

HEARTIEST CONGRATULATIONS TO PARENTS, STUDENTS & TEACHERS

S.S.CHAUDHARY PRINCIPAL	S.R. ARORA MANAGER	RAVINDER KUMAR VICE CHAIRMAN	PUNAM SURI CHAIRMAN

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**